गुज गरिमा

प्रथम अंक - 2022

हडको क्षेत्रीय कार्यालय
अहमदाबाद (गुजरात)

राजभाषा गतिविधियां

तिमाही बैठक एवं कार्यशाला
23.12.2020
हिंदी है मातृभाषा,
सभी इसे जरुर अपनाएँ
अपने बच्चों को
हिंदी पढ़ना जरुर सिखाएँ
राजभाषा पखवाड़ा समारोह

गुज गरिमा

संरक्षक

श्रीमती निशि गर्ग

क्षेत्रीय प्रमुख

संपादक

श्रीमती स्वाति दासानी, प्रबंधक (सचिवीय)/
हिन्दी नोडल अधिकारी

श्री हर्षद पारेख, प्रबंधक (आई.टी.)

शेख सादिक हुसैन, प्रबंधक (आई.टी.)

सह-सम्पादक

श्री विपुल झिंझुवाड़िया, उप महाप्रबंधक (परि.)

श्री नरपत सिंह पुरोहित, प्रबंधक (वित्त)

विशेष सहयोग

अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय के सभी सहकर्मीगण

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
1	संदेश	3-7
2	नवनिर्मित हडको भवन	8-10
3	भारत का एकमात्र वर्ल्ड हेरिटेज सिटी – अहमदाबाद	11-12
4	खुशी क्या है / वाह रे मानव तेरा स्वभाव	13
5	निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) एवं निदेशक (वित्त) का अहमदाबाद दौरा	14-15
6	आधुनिक समय के गृह निर्माण के संदर्भ में ग्रीन हाउसिंग की अवधारणा	16-17
7	श्रद्धांजलि – बाबुलाल पांडोर	18
8	अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय को नराकास द्वारा पुरस्कार	19
9	अं.क्षे.का. द्वारा आयोजित गतिविधियों की झाँकियां	20-21
10	ध्यान (मेडीटेशन) से बदलिए अपना जीवन	22-23
11	साबरमती रिवर फ्रंट डेवलपमेंट परियोजना	24-25
12	एम्बुलेंस वैन की खरीद हेतु सिविल अस्पताल को सीएसआर अनुदान	26-27
13	हडको प्रांगण का अनूठा उद्यान	28-29
14	गुजरात राज्य में नवरात्रि उत्सव	30-31
15	सीएसआर के तहत गुजरात राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में हडको का योगदान	32-33
16	गुजरात विद्यापीठ	34-35
17	लोकतंत्र मे मीडीया की भूमिका	36-37
18	गांधी जी का साबरमती आश्रम	38-39
19	संसदीय समिति द्वारा राजभाषायी निरीक्षण / नराकास स्तरीय प्रतियोगिता का पुरुस्कार वितरण समारोह	40

संदेश

मुझे यह जानकर असीम आनंद का अनुभव हो रहा है कि हडको, अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह ई-पत्रिका "गुज गरिमा" का प्रवेशांक प्रकाशित कर रहा है । राजभाषा हिंदी की गृह पत्रिकाएँ कार्यालय के कर्मचारियों के रचनात्मक पहलू को जागृत करने के साथ संबधित समाज के समक्ष उनके हिन्दी प्रेम को उजागर करती हैं। इसके साथ ही ये पत्रिकाएं पाठकगण को भी राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेरित करके उनमें एक सकारात्मक ललक पैदा करती हैं।

मुझे उम्मीद है कि गुजरात से प्रकाशित इस पत्रिका से राजभाषा हिंदी की महत्वपूर्ण रूप में निरंतर सेवा होती रहेगी । इस पत्रिका के प्रकाशन के लिये मैं हडको, अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय की पूरी टीम को बधाई देता हूँ।

आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषागत सौहार्द स्थापित होगा तथा राजभाषा की सफलता के नए आयाम स्थापित होंगे । राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान देने हेतु इस पत्रिका के सम्पादक मंडल को कोटिशः बधाइयाँ।

कामरान

(कामरान रिजवी)

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि हडको, अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह ई - पत्रिका "गुज गरिमा" का पहला अंक प्रकाशित कर रहा है । "गुज गरिमा" पत्रिका में अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यकलापों, गतिविधियों और गुजरात की संस्कृति के साथ - साथ अधिकारियों की रचनात्मक प्रतिभा भी प्रतिबम्बित होती है ।

राजभाषा हिंदी की गृह पत्रिकाएँ पाठकों और रचनाकारों के बीच संपर्क सेतु स्थापित करने के साथ - साथ अंतर कार्यालयी सम्पर्क में भी अभिवृद्धि करती हैं । मुझे उम्मीद है कि पश्चिम क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के सरलतापूर्वक कार्यान्वयन में यह पत्रिका एक विशिष्ट माहौल स्थापित करेगी ।

इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका के संपादक मंडल और उनकी पूरी टीम को साधुवाद देता हूँ ।

(ऍम . नागराज)
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता और गौरव का विषय है कि हडको का अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वाह करते हुए अपनी गृह ई - पत्रिका "गुज गरिमा" प्रकाशित कर रहा है । राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु कार्यालय का यह प्रयास सराहनीय सिद्ध होगा और पश्चिम क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में इस पत्रिका की भूमिका मील का पत्थर सिद्ध होगी । हडको के अन्य क्षेत्रीय कार्यालय भी इस प्रयास से प्रेरणा प्राप्त करेंगे । इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु मैं हडको के अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय की पूरी टीम की सराहना करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय का यह प्रयास भविष्य में भी यूं ही बना रहेगा ।

(डी . गुहन)
निदेशक (वित्त)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि हडको , अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा अपनी गृह ई - पत्रिका "गुज गरिमा" के प्रवेशांक का प्रकाशन किया जा रहा है । मुझे उम्मीद है कि पश्चिम क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में इस पत्रिका की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगी । इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु मैं हडको अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय के प्रमुख और उनकी पूरी टीम को बधाई देता हूँ ।

इस तरह के प्रयासों से हमारी कार्य प्रणाली की पारदर्शिता परिलक्षित होती है और अन्यों को भी कार्य व्यवहार का उत्कृष्ट आधार प्राप्त होता है । मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका दीर्घजीवी बनकर राजभाषा हिंदी के विकास में अपना भरपूर योगदान देती रहेगी । पत्रिका के सम्पादक मंडल को इस उत्तम कार्य हेतु साधुवाद ।

(अजय मिश्रा)
प्रमुख सतर्कता अधिकारी

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष एंव गौरव का अनुभव हो रहा है कि हडको, अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा के प्रति अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वाह करते हुए अपनी गृह ई पत्रिका "गुज गरिमा" के प्रवेशांक का प्रकाशन करने जा रहा है । मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास भी है कि भारत के पश्चिमी क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में इस पत्रिका की भूमिका अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी । इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु मैं हडको अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय की प्रमुख और उनकी पूरी टीम को बधाई देती हूँ और आशा है कि यह पत्रिका अन्यों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनकर राजभाषा हिंदी के विकास में अपना भरपूर योगदान प्रदान करेगी । पत्रिका के सम्पादक मंडल को इस उत्तम कार्य के लिए अनेक बधाई ।

(उपिंदर कौर)
महाप्रबंधक (राजभाषा)
हडको मुख्यालय

संदेश

सुधिजन पाठकों के समक्ष अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय की गृह ई - पत्रिका "गुज गरिमा" का प्रवेशांक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एंव गौरव का अनुभव हो रहा है । इस प्रवेशांक में अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यकलापों, गतिविधियों, राजभाषा उपलब्धियों के साथ - साथ जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित रोचकपूर्ण लेखों का समावेश किया गया है । विगत वर्षो में अनेक कर्मियों की निवृत्ति / स्थानान्तरण के बावजूद सभी सदस्यों के सामूहिक प्रयासों से हम राजभाषा के प्रति इस संवैधानिक दायित्व का निर्वाह करने में सफल हो सके हैं ।

इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु मैं अपने हडको अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय के समस्त कार्मिकों को बधाई देती हूँ तथा आशा करती हूँ कि यह पत्रिका हम सभी के सामूहिक प्रयासों से दीर्घजीवी बनकर राजभाषा हिंदी के विकास में अपना भरपूर योगदान देगी । पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जुडे सभी अधिकारियों को इस उत्तम कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई ।

कृपया इस प्रवेशांक के बारे में अपनी प्रतिक्रिया एंव बहुमूल्य सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं ताकि आगामी अंको को और भी प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया जा सके ।

(निशि गर्ग)
क्षेत्रीय प्रमुख
हडको अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय

संदेश

यह अत्यंत आह्लाद का विषय है कि हडको, अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा हडको की गृह पत्रिका "गुज गरिमा" के प्रवेशांक का प्रकाशन किया जा रहा है । हडको का अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय, 155 सदस्यी नराकास, अहमदाबाद के अत्यंत सक्रिय कार्यालयों में शुमार है । राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हडको, अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय की उत्तरोतर प्रगति, कार्यालयों के कार्मिकों की राजभाषा के प्रति अपनी सजीव प्रतिबद्धता को इंगित करती है ।

राजभाषा हिंदी के सराहनीय कार्यान्वयन हेतु हडको अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2018-19 एंव 2019-20 के लिए क्रमश : तृतीय एंव द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया जिसके लिए नराकास की ओर से बधाईयाँ एवं हार्दिक शुभकामनाएँ। साथ ही, हडको अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद के सदस्य कार्यालयों हेतु 30-06-2021 को ऑनलाइन हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। आशा है कि हडको अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार - प्रसार हेतु भविष्य में भी इस तरह के सराहनीय कार्य किए जाते रहेंगे ।

हडको, अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका "गुज गरिमा" के प्रवेशांक के सफलतापूर्वक प्रकाशन हेतु भी मैं नराकास के सदस्य कार्यालयों की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ । इस पत्रिका से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद के अन्य सदस्य कार्यालय भी अवश्य प्रेरणा प्राप्त करेंगे । इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु हडको अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय की प्रमुख और उनकी पूरी टीम को हार्दिक बधाईयाँ एवं शुभकामनाएँ ।

(रामविलास राठौड़)
सहायक निदेशक (राजभाषा)
एवं सदस्य सचिव , नराकास , अहमदाबाद

नवनिर्मित हडको भवन

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हडको) का अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय अपने इस नवनिर्मित 'हडको भवन' में नवंबर, 2019 में स्थानांतरित हुआ था। इससे पूर्व यह क्षेत्रीय कार्यालय किराए के भवन में था। 'हडको भवन' तक का सफर काफी लम्बा और दिलचस्प रहा है।

हडको ने ईश्वर भुवन रोड, नवरंगपुरा स्थित इस क्षेत्रीय कार्यालय की 8120.20 वर्ग मीटर की जमीन अहमदाबाद नगर निगम से 17-03-1990 को 2.44 करोड़ रु. में 99 वर्ष की लीज पर खरीदी थी। प्रारम्भ में हडको एवं गुजरात हाउसिंग बोर्ड मिलकर इस जमीन को विकसित करने वाले थे लेकिन बाद में गुजरात हाउसिंग बोर्ड की इस संबंध में अरुचि को देखते हुए हडको ने अहमदाबाद नगर निगम के साथ इस जमीन को विकसित करने की योजना बनाई परंतु अहमदाबाद नगर निगम की भी उदासीनता के कारण जब काफी समय तक कोई विकास नहीं हुआ तो हडको ने वर्ष 2006 में इस जमीन को स्वयं ही विकसित करके अपने अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय के नए भवन के निर्माण का प्रस्ताव अपने निदेशक मंडल के समक्ष अनुमति हेतु प्रस्तुत किया। हडको के निदेशक मंडल ने 15-02-2007 की अपनी 415वीं बैठक में इस प्रस्ताव को पारित किया तथा अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय को इस जमीन को व्यावसायिक रूप से विकसित करने की मंजूरी प्रदान की ।

इस निर्णय को उसके अंजाम तक पहुँचाने के लिए अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय ने सर्वप्रथम 18-07-2008 को अहमदाबाद नगर निगम से इस जमीन का कब्जा ले लिया। तत्पश्चात एक जटिल कार्य करना अभी भी बाकी था और वह था - इस जमीन की लीज डीड की मंजूरी प्राप्त करना। अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा बनाई गई लीज डीड के प्रारूप का अवलोकन मुख्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा किया गया तथा मुख्यालय से स्वीकृत लीज डीड को जब अहमदाबाद नगर निगम की मंजूरी प्राप्त हुई तो ऐसा लगा जैसे इस अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय के सपनों को नई उड़ान मिल गई हो। हडको के निदेशक मंडल ने 31-05-2011 को अपनी 484वीं बैठक में अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय को इस जमीन पर ऑफिस कॉम्प्लैक्स बनाने की स्वीकृति प्रदान की। तदुपरांत निदेशक मंडल ने 30-08-2011 की अपनी 488वीं बैठक में अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय को फेज-1 में एक तिहाई जमीन पर अर्थात् 4872.89 वर्ग मीटर

क्षेत्र में भवन का निर्माण करने हेतु 15 करोड़ रुपए के बजट की मंजूरी प्रदान की। निदेशक मंडल के निर्णयानुसार अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय को 700 वर्ग मीटर का क्षेत्रफल अपने कार्यालय के लिए रखकर बाकी क्षेत्रफल दूसरे सरकारी कार्यालयों को किराए पर देकर मासिक रूप में आय अर्जन करने का निर्देश दिया गया था।

इस संबंध में अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय ने मुख्यालय की अनुमति से केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (**CPWD**-सीपीडब्ल्यूडी) के साथ 24-03-2012 को समझौता ज्ञापन (एमओयू) हस्ताक्षरित किया। अत्यधिक उत्साह के साथ इस जमीन पर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा विधिवत् पूजन के पश्चात निर्माण-कार्य आरंभ किया गया। इस निर्माण कार्य का सुरुचिपूर्ण एवं व्यवस्थित रूप से संचालन करने हेतु सीपीडब्ल्यूडी, क्षेत्रीय कार्यालय एवं मुख्यालय के चुने हुए अधिकारियों की एक स्टीयरिंग कमेटी बनाई गई जो कि नियमित रूप से निर्माण स्थल का निरीक्षण करती थी। अवलोकन के दौरान, निर्माण संबंधी मुद्दों पर चर्चा करके उन पर सर्वसम्मति बनाने, आवश्यक बिंदुओं पर हडको के मुख्यालय की स्वीकृति प्राप्त करके कार्य में अनवरत रूप से प्रगति करके कुल तीन चरणों में बिल्डिंग का निर्माण कार्य किया गया। प्रथम चरण में, भवन का सिविल निर्माण कार्य किया गया, दूसरे चरण में भवन में विद्युत एवं एयर कंडीशनिंग का कार्य किया गया तथा तीसरे चरण में हडको के कार्यालय का इंटीरियर एवं फर्नीचर कार्य करने के उपरांत शेष एंसीलरी कार्य तथा भवन के प्रांगण में हॉर्टीकल्चर का कार्य किया गया। हमें यह बताते हुए गर्व होता है कि सम्पूर्ण भवन का स्ट्रक्चरल डिजाइन, इंटीरियर डिजाइन एवं लैंडस्कैपिंग विषयक डिजाइनिंग मुख्यालय स्थित डी एंड डी विभाग द्वारा किया गया।

भवन निर्माण का कार्य अगस्त, 2018 में समाप्त हुआ। इसके साथ-साथ इस क्षेत्रीय कार्यालय में सीपीडब्ल्यूडी से खुली जमीन पर बागवानी एवं हॉर्टीकल्चर का कार्य करवाया गया था। तदुपरांत हडको भवन को 06-10-2018 को फायर एनओसी प्राप्त हुआ। 22-11-2018 को क्षेत्रीय कार्यालय ने अहमदाबाद नगर निगम के नगर योजना विकास विभाग में बीयू परमीशन (बिल्डिंग यूज परमीशन) हेतु आवदन प्रस्तुत किया। अथक प्रयास और परिश्रम के पश्चात 16-02-2019 को हडको को अहमदाबाद नगर निगम से बीयू परमीशन (बिल्डिंग यूज परमीशन) प्राप्त हुई।

इस भवन के परिसर की कुल भूमि के आधे से अधिक क्षेत्रफल पर हरित आवरण है। साथ ही, पार्किंग की भी अत्यंत सुंदर व्यवस्था है। सम्पूर्ण भवन पूर्णतः वातानुकूलित है। इल भवन में दो लिफ्टें हैं जिनमें से प्रत्येक लिफ्ट में 13 व्यक्ति एक साथ आ-जा सकते हैं। ये दोनों लिफ्टें बेसमेंट से चौथी मंजिल तक आ-जा सकती हैं। सभी मंजिलों पर विट्रीफाइट टाइलें लगी हुई हैं। भवन में पूर्णतः इलैक्ट्रीफिकेशन है। भवन में समस्त आवश्यक सुरक्षा नियमों का पालन किया गया है, जैसे – अग्नि-सुरक्षा, दिव्यांग व्यक्तियों के लिए शौचालय एवं रैलिंग के साथ रैम्प की सुविधा, आदि। प्रत्येक मंजिल पर महिलाओं, पुरुषों एवं शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के लिए शौचालय हैं। इस भवन में विद्युत सब-स्टेशन, ओवरहेड टैंक, जल निकासी एवं स्वच्छता की समुचित व्यवस्था है। स्वच्छता बरकरार रखने हेतु क्षेत्रीय कार्यालय ने जगह-जगह पर कूड़ेदान रखवाए हैं तथा सभी को निर्देश दिए गए हैं कि कूड़-कचरा मात्र कूड़ेदानों में ही फैंका जाए। भवन की डिजाइन में हवादार निर्माण कार्य एवं पर्यावरण विषयक सभी मुद्दों का ध्यान रखा गया है। भवन निर्माण के दौरान इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि इस भवन के परिसर में पुराने वृक्षों को क्षति न पहुँचे।

अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय के इस भवन का पूर्ण निर्मित क्षेत्र 5115.05 वर्ग मीटर है जिसमें अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय 753.13 वर्ग मीटर के क्षेत्र में इस भवन की दूसरी मंजिल पर कार्यरत है। पहली मंजिल को जीएसटी विभाग को किराए पर देने की स्वीकृति दी गई है। तीसरी मंजिल का 753.13 वर्ग मीटर का क्षेत्र विदेश व्यापार महानिदेशालय (डायरेक्टर जनरल ऑफ फॉरेन ट्रेड) को आबंटित किया गया है। चौथी मंजिल का 842.20 वर्ग मीटर का क्षेत्र कस्टम विभाग (**Custom Department**) को आवंटित किया गया है। इस भवन के भूतल के आबंटन हेतु अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय प्रयासरत है। किराए हेतु दी जाने वाली सभी मंजिलों के आबंटन से अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय को प्रति वर्ष अच्छी-खासी आय भी प्राप्त होगी।

जब कोई भी बड़ा कार्य सम्पन्न होता है तो उसका श्रेय कई लोगों को जाता है। अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय के साथ मुख्यालय के डी एंड डी विभाग, वित्त विभाग, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग एवं हडको के सभी शीर्षस्थ अधिकारियों तथा निदेशक मंडल के आपसी सामंजस्य से निर्मित इस भवन की गणना आज पश्चिमी अहमदाबाद के श्रेष्ठ भवनों में की जाती है। किसी ने ठीक ही कहा है-

"अकेले में अक्सर हम अपनी परछाइयों से डर जाते हैं।
साथ मिले अगर किसी का तो हम दुनिया से जीत जाते हैं।"

अहमदाबाद के हृदय समान नवरंगपुरा क्षेत्र में स्थित यह भवन सबके मन में एक अनूठी छाप छोड़ता है। इस परिसर को एक बार देखने से सभी आगतुकों के दिल में "हड़को भवन" की एक अनौखी छवि उभर आती है। इसका रंग-रूप, हरे-भरे वृक्ष, पुष्पों की क्यारियाँ एवं ऊँचे-ऊँचे झरोखे इस "हड़को भवन" की पहचान हैं। शहर के सभी नागरिक इस भवन से परिचित हैं। यह वाकई हमारे लिए गौरव की बात है जिसकी गाथा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहेगी।

श्रीमती निशि गर्ग
क्षेत्रीय प्रमुख

भारत का एकमात्र वर्ल्ड हेरिटेज सिटी – “अहमदाबाद”

यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज कमिटी ने गुजरात के अहमदाबाद शहर को वर्ष 2017 में वर्ल्ड हेरिटेज सिटी घोषित किया था। गुजरात का अहमदाबाद सफाई के मामले में पहले भी चर्चा में रह चुका है और 2017 में इसे वैश्विक धरोहर का दर्जा भी मिल गया है। भारत के लिए यह गर्व की बात है क्योंकि इससे पहले भारत के कई शहरों की कई ऐतिहासिक इमारतों को हेरिटेज का दर्जा मिला हुआ है, लेकिन किसी शहर को पहली बार यह सम्मान मिला है। सबसे बड़ी बात ये है कि इस सूची में दिल्ली और मुंबई भी शामिल थी, लेकिन दिल्ली और मुंबई जैसी मॉर्डन सिटी को पीछे छोड़ अहमदाबाद आगे निकल गया।

यूनेस्को की ओर से गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी को अहमदाबाद के हेरिटेज सिटी बनने का सर्टिफिकेट सौंपते हुए। साथ में उपस्थित हैं - तत्कालीन उप मुख्यमंत्री श्री नितिनभाई पटेल।

अहमदाबाद को यूनेस्को द्वारा भारत का पहला वैश्विक धरोहर शहर का दर्जा दिया गया है। बता दें कि ऐसा पहला पहली बार है जब यूनेस्को ने भारत के किसी शहर को विश्व विरासत घोषित किया है। हालाँकि यूनेस्को भारत की कई ऐतिहासिक इमारतों को वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित कर चुका है। तुर्की, लेबनान, ट्यूनिशिया, पेरू, कजाकिस्तान, पुर्तगाल, जमैका, विएतनाम, तंजानिया, फिनलैंड, अजरबैजान, जिम्बाबे, क्रोशिया, अंगोलिया, क्यूबा, दक्षिण कोरिया और पोलैंड जैसे 20 देशों ने अहमदाबाद का समर्थन किया था। अहमदाबाद 600 साल पुराना शहर है। यूनेस्को ने अपने नोट में यह भी लिखा कि 15वीं सदी में सुल्तान अहमद शाह द्वारा बसाया गया अहमदाबाद साबरमती नदी के पूर्वी तट पर बसा है। इस शहर में आर्किटेक्ट के बेहतरीन उदाहरण हैं। हिंदू, मुस्लिम और जैन धर्मों के लोगों के इस शहर में एक साथ बसने तथा यहाँ के बेहतरीन आर्किटेक्चर की वजह से इसे चुना गया था। इस शहर में भद्र का किला, किले की दीवारें और उसके गेट, यहाँ कई मस्जिदें और मकबरें हैं, वहीं, बाद के समय में बने कई हिंदू और जैन मंदिर भी यहाँ हैं। 1915 से 1930 ई. के दौरान महात्मा गांधी भी यहाँ रहे थे। 600 साल पुराने इस शहर में सुल्तानों, अफ्रीकी मूल के सीदी बादशाहों, मुगल सम्राटों और देश के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की भी कहानियाँ बसी हैं।

अहमदाबाद के वर्ल्ड हेरिटेज सिटी बनने के पीछे बहुत-से कारण हैं, जैसे कि गुजरात में 50 संग्रहालय हैं, जिनमें से 22 अहमदाबाद में हैं। कैलिको टेक्सटाइल म्यूजियम से लेकर गाँधी मेमोरियल म्यूजियम तक, इस शहर का इतिहास बहुत ही समृद्ध है। शहर भर में मौजूद कई ऐतिहासिक स्मारकों के साथ, अहमदाबाद का आर्किटेक्चर, इस्लाम और हिन्दू, दोनों ही विरासतों का मिश्रण है। 15वीं शताब्दी का भद्र किला और झूलता मीनार, इस बात का परिचय देते है कि अहमदाबाद के आर्किटेक्चर पर बहुत सी संस्कृतियों का प्रभाव रहा है। ऐसा ही एक और ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्थल है अडालज बावड़ी, जो कि हिन्दू और मुस्लिम विरासत का मिश्रण है।

भद्र किला

झूलता मीनार

अडालज बावड़ी

कैलिको टेक्सटाइल म्यूजियम

अहमदाबाद में ब्रिटिश आर्किटेक्चर के भी कई उदाहरण देखने को मिलते हैं, जैसे कि एलिसब्रिज और मंगलदास गिरधरदास टाउन हॉल का आर्किटेक्चर।

हालांकि, अहमदाबाद के लिए इस सम्मान को प्राप्त करना बहुत आसान नहीं रहा। वर्ल्ड हेरिटेज समिति ने शहर के कई दौरों के बाद यह फ़ैसला लिया और अहमदाबाद को भारत की पहली वर्ल्ड हेरिटेज सिटी बनने का सम्मान मिला।

यह सम्मान न केवल अहमदाबाद के लिए, बल्कि भारत के लिए भी गर्व की बात है।

(विमल शर्मा)
उप महापबंधक (परियोजना)

खुशी क्या है ?

यह एक अजीब सवाल लगता है ना ? क्या आप जानते हैं कि खुशी को कैसे परिभाषित किया जाता है? क्या आपको लगता है कि खुशी आपके लिए भी वैसी ही है जैसी दूसरों के लिए है? इन सब सवालों का क्या मतलब है? क्या इस से हमारे जीवन में भी कोई फर्क पड़ता है?

हम हमेशा खुश रहने के लिए कुछ न कुछ खोज करते रहते हैं । खुश रहने के लिए प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक एहसास होता हैं जो दूसरों से भिन्न हो सकता है । आज प्रत्येक इंसान किसी चीज या व्यक्ति का सहारा लेकर या कहीं न कहीं अपनो से दूर जाकर अपनी खुशी खोजता है । इसी का फायदा उठाकर कई लोगो ने इसके कोचिंग क्लासेज खोल दिये जिसमे लोग जाते भी है । यह सब करने से खुशी का कारण कभी खोज नही सकगें, वरना ओर उलझ जायेगें ।

मेरा मानना है कि अपनी खुशी के लिए हमे कही भी जाने की जरुरत नहीं पड़ती किंतु अपनी व्यस्त दिनचर्या में से कुछ समय अपने आप से बात करे ओर हम अपने खुशी के लिए क्या कर सकते है वह सोचना चाहिए और उसके लिए अपनी समयबद्ध जीवन से कुछ घंटे अवश्य बिताने चाहिए ।

वास्तव में खुशी मन की एक अवस्था होती है, जो हमे किसी भी सामान्य परिस्थिति में मिल सकती है । खुशी मन का भाव है इसलिए इसे शब्दों में बया करना कठिन हैं केवल इसे महसूस ही किया जा सकता हैं । खुशी एक ऐसा भाव है जो इस जीवन को जीने की एक ऊर्जा देती है एक स्वस्थ जीवन के लिए भी खुशी मन ही जिम्मेदार होता है। पर ,सच्ची खुशी मन से खुश होना या चेहरे पर मुस्कान लाना नही होती बल्कि सच्ची खुशी तो आत्मा के खुश होने पर आती है ।

अच्छी हेल्थ, सकारात्मक विचार इंसान को हमेशा संतुष्ट रखते है, संतुष्टि एवं खुशी एक दूसरे के पर्याय है. जिस के जीवन में संतुष्टि के भाव होंगे, वहा खुशी स्वतः ही आएगी । जीवन में खुशी पाने में एक बड़ी बाधा नकारात्मक विचार होते है जो केवल क्षोभ, चिंता, भय, दुःख एवं उदासी का कारण बनते हैं । सकारात्मकता को अपने जीवन में स्थान देकर आप अपने आंतरिक अवसादों को पराजित कर जीवन में कभी न लौटने वाली खुशी से जी सकते हैं.

हर्षद बी पारेख,
प्रबंधक(आई.टी.)

वाह रे मानव तेरा स्वभाव....

यह मंदिर-मस्ज़िद भी क्या गजब की जगह है दोस्तो.
जहाँ गरीब बाहर और अमीर अंदर 'भीख' मांगता है..

विचित्र दुनिया का कठोर सत्य..

बारात मे दुल्हे सबसे पीछे और दुनिया आगे चलती है,
मय्यत मे जनाजा आगे और दुनिया पीछे चलती है..

यानि दुनिया खुशी मे आगे और दुख मे पीछे हो जाती है..!

अजब तेरी दुनिया गज़ब तेरा खेल!

मोमबत्ती जलाकर मुर्दों को याद करना
और मोमबत्ती बुझाकर जन्मदिन मनाना...

लाइन छोटी है,पर मतलब बहुत बड़ा है ~
उम्र भर उठाया बोझ उस कील ने ...
और लोग तारीफ़ तस्वीर की करते रहे ..

लाश को हाथ लगाता है तो नहाता है ...
पर बेजुबान जीव को मार के खाता है ।।

पायल हज़ारो रूपये में आती है, पर पैरो में पहनी जाती है, और...
बिंदी 1 रूपये में आती है मगर माथे पर सजाई जाती है
इसलिए कीमत मायने नहीं रखती उसका कृत्य मायने रखता हैं.

एक किताबघर में पड़ी गीता और कुरान आपस में कभी नहीं लड़ते, और
जो उनके लिए लड़ते हैं वो कभी उन दोनों को नहीं पढ़ते....

नमक की तरह कड़वा ज्ञान देने वाला ही सच्चा मित्र होता है,

मीठी बात करने वाले तो चापलूस भी होते है।
इतिहास गवाह है की आज तक कभी नमक में कीड़े नहीं पड़े।
और मिठाई में तो अक़्सर कीड़े पड़ जाया करते है...

इंसान की समझ सिर्फ इतनी हैं कि उसे "जानवर" कहो तो
नाराज हो जाता हैं और "शेर" कहो तो खुश हो जाता हैं!

सादिक शेख
प्रबंधक (आई टी)

निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) का अहमदाबाद दौरा

गुजरात सरकार के साथ दीर्घकालिक व्यावसायिक संबधों को सतत बनाकर रखने के उद्धेश्य से श्री एम.नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) द्वारा दिनांक 19.02.2021 को अहमदाबाद का दौरा किया गया । दौरे के दौरान निदेशक महोदय ने गुजरात राज्य के वरिष्ठतम अधिकारियों से मुलाकात की एंव संभावित योजनाओं के लिये हडको द्वारा वित्तपोषण के संबध में चर्चा की ।

श्री अनिल मुकिम, आई.ए.एस., मुख्य सचिव, गुजरात सरकार

श्री पंकज जोशी, आई.ए.एस., अतिरिक्त मुख्य सचिव (वित्त), गुजरात सरकार

श्री एस.जे.हैदर, आई.ए.एस., उप अध्यक्ष एंव प्रबंध निदेशक, GSRTC एंव प्रमुख सचिव, क्लाईमेट चेंज विभाग, गुजरात सरकार

श्री कमलेशकुमार बी.राबड़िया सचिव (कल्पसर) नर्मदा वाटर रिर्सोसेज वाटर सप्लाई एंव कल्पसर विभाग, गुजरात सरकार

अहमदाबाद क्षे.का. के संचालन की समीक्षा

निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग), अहमदाबाद दौरे के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारी एंव कर्मचारीगण के साथ भी बैठक की गई जिसमें अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय के व्यावसायिक संचालन, नवनिर्मित हडको भवन की शेष मंजिलों को किराये पर देने की स्थिति, डिफाल्ट स्टेटस, हडको कन्सलटेन्सी, सी.एस.आर., प्रधानमंत्री आवास योजनाओं आदि की स्थिति पर चर्चा की गई। निदेशक महोदय द्वारा नवनिर्मित हडको भवन के रख रखाव, सफाई व्यवस्था, सौंदर्यीकरण एंव अनुपम उद्यानीकरण की भूरी भूरी प्रंशसा की गई ।

निदेशक (वित्त) का अहमदाबाद दौरा

दिनांक 26.02.2020 को निदेशक (वित्त), के अहमदाबाद दौरे के दौरान क्षेत्रीय प्रमुख के साथ गुजरात मेट्रो रेल कोर्पोरेशन लि. के प्रबंधक निदेशन श्री एस.एस राठोर(पद्म श्री) के साथ बैठक की गई। इस बैठक के बाद क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण के साथ भी बैठक की गई जिसमें उन्होंने विशेष रूप से वार्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में तथा साथ ही कंसल्टेंसी व्यवसाय के अवसरों की खोज मे सभी कर्मचारियों की पूर्ण भागीदारी पर जोर दिया।

आधुनिक समय के गृह निर्माण के संदर्भ में ग्रीन हाउसिंग की अवधारणा

तेजी से बढ़ता हुआ शहरीकरण, बढ़ते हुए शहर यों तो विभिन्न अवसर भी प्रदान करते हैं, पर मलिन बस्तियों का फैलाव, भूमि और निर्माण-सामग्री की उच्च कीमतें आम आदमी के लिए घर खरीदने के सपने को सच होने में और अधिक मुश्किल बना देती है। इसलिए, निम्न-आय वर्ग के लिए पर्याप्त आवास की आवश्यकता काफी हद तक बढ़ जाएगी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब हम समाज के इन वर्गों के लिए आवास बनाते हैं, तो उन्हें भी हरा-भरा होना चाहिए। हरित और स्थिरता का सिद्धांत सौभाग्य से या दुर्भाग्य से समुदाय के लिए इस अर्थ में उपयोगी हो सकता है क्योंकि उन्हें अपव्यय को थोड़ा और सावधानी से कम करने, ऊर्जा और पानी के उपयोग में मितव्ययी होने, महामारी के प्रकोप से बचने के लिए स्वच्छ तरीके से कचरे के निकास करने की महती आवश्यकता है। प्रकृति के साथ बेमेल सामग्री का कम उपयोग करने से उनके जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि होती है ।

एक हरित भवन के घटक इसके जीवन चक्र मूल्यांकन, संरचना डिजाइन, ऊर्जा, पानी और सामग्री के उपयोग के संदर्भ में दक्षता, आंतरिक पर्यावरण गुणवत्ता में वृद्धि, संचालन और रखरखाव अनुकूलन, अपशिष्ट में कमी आदि से संदर्भित हैं। डिजाइन करते समय विचार किए जाने वाले कारको में एक ग्रीन बिल्डिंग आकार, अभिविन्यास, लेआउट, स्थानीय सामग्री, पुनर्नवीनीकरण सामग्री, वायु इन्सुलेशन, विंडोज़ और दरवाजों का चयन, टिकाऊ सामग्री, ऊर्जा स्टार उपकरण, एलईडी लाइटिंग, जल संरक्षण फिक्स्चर, कुशल पावर सेवर एचवीएसी, वर्षा जल संग्रह और रिसायकल, ऊर्जा सौर गर्म पानी, हरित रोपण/बागवानी शामिल हैं।

हरित भवनों में जल एंव उर्जा का कुशल उपयोग, नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग और पुनर्नवीनीकरण / पुनर्नवीनीकरण सामग्री का उपयोग, भूदृश्यों का प्रभावी उपयोग और भवन प्रबंधन प्रणाली जैसी स्थायी विशेषताएँ शामिल हैं। पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार और संसाधन-कुशल भवन, निर्माण उद्योग का एक अभिन्न अंग और भविष्य बन रहे हैं। डेवलपर्स, अंतिम उपयोगकर्ता और सरकार इसकी आवश्यकता और महत्व को समझ चुके हैं और इसे तेज गति से अपना रहे हैं। कई घर खरीददार हरित संपत्तियों, लागत बचत और स्वस्थ जीवन के बीच महत्व और लिंक को पहचानकर ग्रीन होम और टिकाऊ इमारतों पर ध्यान दे रहे हैं।

वर्तमान में तेजी से शहरीकरण और बढ़ती आबादी के फलस्वरुप आवास और बुनियादी ढाँचे की बढ़ती जरूरतों के कारण भारत में निर्माण में तेजी दिखाई दे रही है। जब 2001 में भारतीय हरित भवन परिषद (आईजीबीसी) की स्थापना हुईए वह 1,858 वर्ग मीटर के फर्श क्षेत्र के साथ एक हरित भवन के रूप में की गई थी। इस से देश में स्थायी भवनों की शुरूआत को चिह्नित किया गया । आज, 2,100 से अधिक आईजीबीसी-प्रमाणित भवन लगभग 140 मिलियन वर्गमीटर (आईजीबीसी) में व्याप्त हैं।

हरित आवास कम अपशिष्ट पैदा करता है और रहने हेतु एक स्वस्थ वातावरण प्रदान करता है।

लाभ

किफायती आवास क्षेत्र में हरित अवधारणाएँ और तकनीकें निम्नलिखित रूप में हमें सहायक सिद्ध हो सकती हैं :

- ऊर्जा और पानी की खपत में कमी / कम लागत
- बेहतर स्वास्थ्य / सेहत और स्वच्छता
- बेहतर स्वच्छता, पुनर्विक्रय और किराए के मामले में राजस्व में वृद्धि
- आवासों में पर्यावरण के अनुकूल बेहतर वेंटिलेशन और रोशनी
- लोगों को कार्यस्थलों तक ले जाने में ईंधन की बचत और संबंधित प्रदूषण / सरकारी योजनाओं का लाभ /प्रोत्साहन राशि

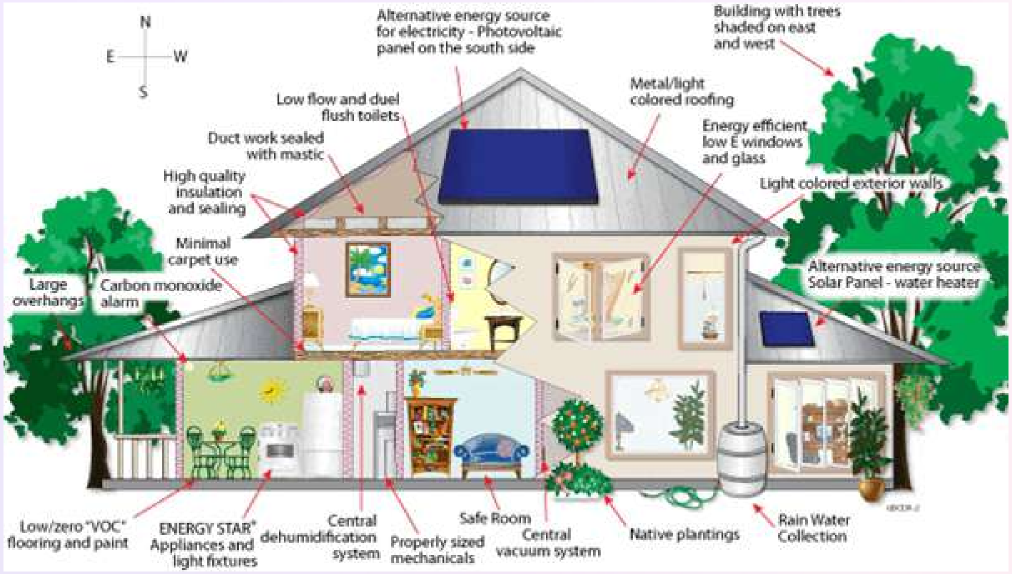

हरित भवनों के समग्र फायदे इस बात पर निर्भर करते हैं कि प्रारंभिक योजना और डिजाइन चरण में टिकाऊ सुविधाओं को किस हद तक लागू किया जाता है। यदि स्थायी सुविधाओं की कल्पना की जाती है और शुरूआत में ही इन्हें शामिल किया जाता है तो एक हरित भवन के अपने उद्देश्य में सफल होने की सबसे अधिक संभावना है। मौजूदा आवासीय भवनों को यथोचित रूप से ऊर्जा-कुशल भवनों में पुनः स्थापित करना एक चुनौती है। 2025 तक मौजूदा इमारतों की रेट्रोफिटिंग क्षमता पाँच गुनी हो जाएगी। प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से क्षरण और ग्लोबल वार्मिंग में खतरनाक वृद्धि का मतलब है कि अब समय बीत चुका है तथा हमें हरित और टिकाऊ आवास की ओर बदलाव की माँग करनी चाहिए।

(हेम सिंह ओलिवर)
संयुक्त महाप्रबंधक (परियोजना)

श्रद्धांजलि - बाबूलाल पांडोर

यह एक स्मरण और श्रृद्धांजलि है - श्री बाबूभाई के लिए जो हडको से सेवा निवृत होकर एक्स-सर्विस मैन के रूप में हडको के नवनिर्मित कार्यालय में डी.जी.आर. की तरफ से सुरक्षाकर्मी के रूप में हडको से 2021 तक जुड़े रहे। वर्ष 2021 में श्री बाबूभाई कोरोना की चपेट में आए तथा करोना से संघर्ष करते हुए स्वर्ग सिधारे। श्री बाबूभाई लम्बे समय तक हड़को में अहमदाबाद क्षेत्रीय प्रमुख के साथ ए.एफ. के रूप में कार्यरत रहे। उनकी कार्यनिष्ठा, समय पाबंदी, सरल स्वभाव सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक मिसाल थी जो आगे भी रहेगी। श्री बाबूभाई जब 2019 में हडको से सेवा निवृत हुए, तब मैंने निम्नलिखित कविता उनके विदाई समारोह में प्रस्तुत की थी

जिंदादिली का नाम - बाबूभाई

आज विदा ले रहे हैं हम सब से श्री बाबूभाई

बहुत कठिन है हमारे लिए, इनकी ये विदाई।।

इक मिसाल हैं जिंदादिली की हमारे बाबूभाई

जिन्होंने कभी गम नहीं, सिर्फ अपनी हँसी ही दिखाई।।

अनुशासन का प्रतीक बाबूभाई हैं

हर कठिनाई में, उन्होंने हार कभी न मानी है।।

समय से पहले आना, सबसे आखिर में जाना,

कभी किसी ने कुछ कह दिया, तो भी हँसते रहना।।

हँसते-हँसते उन्होंने ये पारी बिताई

जटिल संघर्षों में भी अपनी कठिनाई नहीं बताई।।

जीवन में सच्ची खुशी की मिसाल हैं ये

क्योंकि कुछ माँगते नहीं, केवल खुशबू फैलाते हैं ये।।

एक व्यक्ति कैसे बन जाता है सभी की प्रेरणा

चुपके से बन जाता है सबके जीवन का हिस्सा

हम सब न भूल पाएँगे वो रात और दिन

आपके स्पेशल हाथों की स्पेशल कॉफी व चाय

जब भी हो सके, जरूर हमसे मिलने आएँ

आगामी जीवन के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।।

आज श्री बाबूभाई हमारे बीच नहीं हैं।

एक श्रृद्धांजलि प्रस्तुत है –

बहुत से लोग आते हैं, चले जाते हैं

राही मिलकर कुछ वक्त, बिछड़ जाते हैं।

जो हमें जीवन जीने की लम्बी सीख दे गए

उन बाबूलाल दिताजी पडौर को हम सबका सलाम।

श्रीमती निशि गर्ग
क्षेत्रीय प्रमुख

राजभाषा नीति के सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिये अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय को नराकास द्वारा पुरुस्कार

वर्ष 2018-19

वर्ष 2019-20

अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियां

“ध्यान से बदलिए अपना जीवन”

ध्यान :

हमारे जीवन के तनाव और व्याकुलता का केवल एक ही कारण है, वह है - अस्थिरता और इससे उबरने के लिए एक ही उपाय है कि हम अपने अस्तित्व के आधारभूत स्थिर-बिंदु को खोजें और उससे जुड़ने की कला सीख लें अर्थात जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने और तनावमुक्त रहने का सबसे सरल एंव उपयोगी तरीका ध्यान या Meditation ही है | जानिए कैसे ध्यान या Meditation हमारी तनावपूर्ण जिंदगी को शांतिपूर्ण और आनंदित जिंदगी में बदल सकता है |

ध्यान, अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनने की विधि है :

हर मनुष्य के अन्दर एक शांत मनुष्य रहता है जिसे हम अपनी अंतरात्मा कहते है| सभी महान लोगों ने यह माना है कि हमारी अंतरात्मा में एक अद्भुत शक्ति होती है | हम भी कभी कभी महसूस करते है कि शायद हमारी अंतरात्मा एक ईश्वरीय अंश है या फिर हमारी अंतरात्मा ईश्वर से हमेशा जुडी रहती है तभी तो वो हर परिस्थिति में सही होती है|

स्वामी विवेकानंद ने कहा है – “आप ईश्वर में तब तक विश्वास नहीं कर पाएंगे जब तक आप अपने आप में विश्वास नहीं करते|” इसलिए ईश्वर से जुड़ने से पहले हमें अपनी अंतरात्मा से जुड़ना होता है या यूं कहें कि जब हम अपनी अंतरात्मा से जुड़ जाते है तो उस अद्भुत ईश्वरीय शक्ति से स्वत: ही जुड जाते है और मैडिटेशन हमें अपनी अंतरात्मा से जोड़ता है| लगातार रोज मैडिटेशन करने पर हमें अद्भुत अनुभव होने लगते है जिसे शब्दों द्वारा नहीं बताया जा सकता| हमें उन सवालों के जवाब मिलने लगते है जो अभी तक अनसुलझे थे| हमें ऐसा लगता है जैसे हमारे साथ एक शक्ति है जो हमेशा हमारी मदद कर रही है |

खुश रहने का सीधा सा तरीका यह होता है कि हम अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनें क्योंकि हमारी अंतरात्मा हमेशा हर परिस्थिति में सही होती है| हम जब कभी भी कुछ बुरा कर रहे होते है तो हमें कुछ अजीब सा लगता है मानो कोई हमें यह कह रहा हो कि वह बुरा काम मत करो| यह हमारी अंतरात्मा होती है जो हमें कुछ बुरा करने या किसी को दुःख पहुँचाने से रोकती है| और जब हम अपनी अंतरात्मा की आवाज को अनसुना कर देते है तो हमारा अपनी अंतरात्मा से संपर्क कमजोर हो जाता है|

जब हम दूसरी बार कुछ बुरा करने जा रहे होते है तो हमें अपनी अंतरात्मा की आवाज फिर महसूस होती है लेकिन इस बार वह आवाज इतनी मजबूत नहीं होती क्योंकि हमारा अपनी अंतरात्मा से संपर्क कमजोर हो चुका होता है| जैसे जैसे हम अपनी अंतरात्मा की आवाज को अनसुना करते जाते है वैसे वैसे हमारा अपनी अंतरात्मा के साथ संपर्क कमजोर होता जाता है और एक दिन ऐसा आता है कि हमें वो आवाज बिल्कुल नहीं सुनाई देती| जैसे जैसे हमारा अपनी अंतरात्मा के साथ संपर्क कमजोर होता जाता है वैसे वैसे हम उदास रहने लगते है और खुशियाँ भौतिक वस्तुओं में ढूंढने लगते है| हम समस्याओं को हल करने में असक्षम हो जाते है जिससे “तनाव” हमारा हमसफ़र बन जाता है और ऐसी परिस्थिति में हमें स्वंय को वापस अपनी अंतरात्मा के साथ जोड़ना होता है और इसका सबसे अच्छा तरीका ध्यान या मैडिटेशन है|

'ध्यान' = ध्याता + ध्येय :

‘ध्यान'='ध्याता'+'ध्येय'। ध्यान दो तत्वों का योग है ध्याता (Subject) और ध्येय (Object)। यदि 'ध्येय' होगा, तभी 'ध्यान' लगेगा। अब देखा जाए, 'ध्याता' तो हम हैं। परंतु शुद्ध-विशुद्ध 'ध्यान' के लिए 'ध्येय' होना चाहिए। हमारे समस्त शास्त्र-ग्रंथों के अनुसार इस सकल जगत में साधने योग्य एकमात्र ध्येय वह चिरस्थायी सत्ता है, जो हर मनुष्य के भीतर 'प्रकाश स्वरूप आत्मा' के रुप में विद्यमान है। प्रश्न यह उठता है कि आत्मतत्व के इस प्रकाशस्वरुप का साक्षात्कार किस प्रकार संभव है। इसका समाधान देते हुए जगतगुरु श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हैं कि

न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्।।

हे अर्जुन तू मुझको अपने इन प्राकृत नेत्रों द्वारा देखने में निःसंदेह समर्थ नहीं है; इसीलिए मैं तुझे दिव्य अर्थात् अलौकिक चक्षु देता हूँ; उससे तू मेरी ईश्वरीय योग शक्ति को देख।

ध्यान की शर्त क्या है : “बिन गुरु दिख्या कैसे ज्ञान, बिन पैखे कहो कैसो ध्यान”

जब तक गुरु के द्वारा दीक्षा प्राप्त नहीं होती तब तक कैसे जानेंगे क्या ज्ञान, देखा ही नहीं तो ध्यान कैसा! इसीलिए हमें अपने जीवन के अंदर ऐसे पूर्ण सतगुरू की खोज करनी है जो हमें दीक्षा प्रदान कर हमारे उस दिव्य चक्षु को खोल दें। जिसके बाद अंदर कुछ दिखे, ध्येय मिले। हमारा ध्यान सफल हो पाए। यहीं शाश्वत्व प्रक्रिया हमारे समस्त धार्मिक ग्रंथ बताते है। आज कुकुरमुत्तों की तरह स्थान-स्थान पर ध्यान केंद्र खुल गए हैं, जिनमें तरह-तरह की मेडिटेशन तकनीकें सिखाई जाती हैं। इन ध्यान तकनीकों ने हमें निःसंदेह सहारा अवश्य दिया, परन्तु इतना अधूरा कि हम पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो पाए। अतः इस स्थिति में हमें एक ऐसे अनुभवी डॉक्टर अर्थात् पूर्ण सतगुरू की दीक्षा खोजनी होगी, जो ध्यान-साधना की सटीक और उपयुक्त विद्या प्रदान करने की सामर्थ्य रखते हों।

जब ध्यान लगने से मन को एकाग्रता मिलती है, तो हमारे विचार (thought) हमारे नियंत्रण में आते है और परिणामस्वरुप जीवन का हरएक कार्य नियंत्रण में होता है। काम नियंत्रण में होने से हमारा आचरण (conduct) अच्छा बनता है। आचरण अच्छा है तो सारा का सारा जीवन ही अच्छा बनता है। और इस प्रकार जब एक-एक व्यक्ति अच्छा बनता है तो समस्त समाज विश्व ही कल्याण को प्राप्त होता है। फिर सब तरफ शांति और संतुष्टि की भावना पैदा होती है। तब जीवन में निराशा का कोई स्थान नहीं होता।

सारांशत : 'बाहरी नेत्रों को बंद करना ध्यान नहीं, अपितु दिव्य-नेत्र का खुल जाना ध्यान का आरम्भ है।’

***

(आलेख के कुछ भाग का संकलन दिव्य ज्योति जागृति संस्थान की “अखण्ड ज्ञान पत्रिका” से किया गया है)

स्वाति दासानी
प्रबंधक (सचिवीय)

अहमदाबाद, गुजरात में साबरमती रिवर फ्रंट डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एसआरएफडीसीएल) को साबरमती रिवर फ्रंट डेवलपमेंट परियोजना को लागू करने के लिए हडको की वित्तीय सहायता

1960 के दशक की शुरूआत में अहमदाबाद में रहने वाले एक फ्रांसीसी वास्तुकार श्री बर्नार्ड कोह्न ने नदी के दोनों किनारों के साथ वाणिज्यिक, मनोरंजक और आवासीय विकास के मिश्रण के साथ साबरमती रिवर फ्रंट के विकास की कल्पना की थी। लम्बे समय से यह स्वीकार किया गया था कि नदी के किनारे को अपनी अवांछनीय स्थिति से एक प्रमुख शहरी संपत्ति में बदला जा सकता है। इस परियोजना के तहत भूमि के पुनर्ग्रहण का कार्य किया गया। अधिग्रहीत भूमि का एक हिस्सा परियोजना के लिए राजस्व उत्पन्न करने के लिए बेचा या पट्टे पर दिया जाना था।

अहमदाबाद के मध्य से गुजरने वाली साबरमती नदी लम्बे समय से शहर के शहरी और औद्योगिक विकास की तेज गति के कारण गंभीर दबाव के अधीन थी। शहर के स्तर पर एक सामाजिक बुनियादी ढाँचा और मनोरंजन सुविधाएँ प्रदान करने की इसकी क्षमता अप्रयुक्त ही थी। यह शहर के लिए पानी के प्रमुख स्रोतों में से एक थी, लेकिन सीवेज के दूषित पानी और औद्योगिक कचरे की डंपिंग ने एक प्रमुख स्वास्थ्य और पर्यावरण विषयक गम्भीर खतरा पैदा कर दिया। हालाँकि नदी के तट बहुत से गरीब नागरिकों को रहने के लिए जगह और आजीविका का स्रोत प्रदान करते हैं, नदी के किनारे की झुग्गियाँ विनाशकारी रूप में दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही थीं तथा इन झुग्गियों में आवश्यक बुनियादी सुविधाओं की कमी थी। नदी के किनारे स्थित मलिन बस्तियाँ नदी में मानसूनी बाढ़ के कुशल प्रबंधन में एक बड़ी बाधा थीं। यह लम्बे समय से स्वीकार किया गया था कि रिवरफ्रंट का उचित विकास करके साबरमती नदी को एक प्रमुख परिसंपत्ति में परिवर्तित किया जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप अहमदाबाद के पर्यावरण और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।

मौजूदा बुनियादी ढाँचे में सुधार लाने और शहर में इस तरह के दबाव को कम करने तथा अतिरिक्त बुनियादी सुविधाओं का निर्माण करने के लिए गुजरात सरकार और अहमदाबाद नगर निगम ने साबरमती रिवर फ्रंट डेवलपमेंट (एसआरएफडी) परियोजना को लागू करने के लिए उच्च प्राथमिकता दी। गुजरात सरकार ने एसपीवी (अहमदाबाद नगर निगम द्वारा 100% प्रचारित) के रूप में इस अनूठी परियोजना को शुरू करने के लिए साबरमती रिवर फ्रंट डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (एसआरएफडीसीएल) का गठन किया। एसआरएफडीसीएल ने पूरे नदी बेसिन, उसके जलग्रहण, जल प्रतिधारण विकल्पों, तटबंध निर्माण तकनीकों और नदी हाइड्रोलिक्स का व्यवस्थित अध्ययन किया था। इन सभी पहलुओं के व्यापक अध्ययन के आधार पर नर्मदा मुख्य नहर से वासणा बैराज तक साबरमती नदी के 20.4 किलोमीटर के खंड के दोनों किनारों के विकास हेतु रणनीति तैयार की गई।

देश में इस तरह की यह पहली परियोजना है जिसका उद्देश्य अहमदाबाद को साबरमती नदी के किनारे एक सार्थक वाटरफ्रंट वातावरण प्रदान करना, नदी के तट पर स्थित अहमदाबाद की पहचान को फिर से परिभाषित करना, कई पर्यावरणीय और सामाजिक चिंताओं को दूर करना और शहर के लिए एक बड़ी संपत्ति के रूप में नदी का उपयोग करना है। यह परियोजना जल निकासी, भूमि विकास और सौंदर्यीकरण के संयोजन का एक एकीकृत प्रयास है। इसने संरचनात्मक बैक फिलिंग के साथ नदी के किनारे पर स्थित लंगर वाली डायाफ्राम दीवार और गेबियन ब्लॉक जैसी नवीन तकनीकों के उपयोग की परिकल्पना की गई। इस परियोजना को दो चरणों में विभाजित किया गया है। पहला चरण वासणा बैराज से रेलवे ब्रिज के अपस्ट्रीम तक 11.48 किमी तक का है, जबकि दूसरा चरण नर्मदा नहर, गांधीनगर तक सुविस्तृत है। पहले चरण की परियोजना पूरी हो चुकी है और इसे तीन चरणों में विभाजित किया गया है।

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (हडको) केंद्र सरकार का ऐसा एकमात्र वित्तीय संस्थान है जिसने साबरमती रिवर फ्रंट डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड को वित्तीय सहायता प्रदान करके इस अनूठी परियोजना के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। हडको ने पहले चरण की परियोजना को तीन चरणों में वित्तपोषित किया था और 2005 से 2013 के दौरान **SRFDCL** को 900 करोड़ रुपये (योजना संख्या 18329, 18867, 19751 और 19952) का सावधि ऋण स्वीकृत किया था। एसआरएफडीसीएल ने 681 करोड़ रुपये का सावधि ऋण लिया था तथा इससे साबरमती रिवर फ्रंट डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के विकास और परियोजना घटकों को पूरा किया गया।

यह परियोजना जनता को लाभान्वित करने वाली अहमदाबाद नगर निगम की एक स्थायी परिसम्पत्ति है। अहमदाबाद नगर निगम ने हडको की सहायता से अपने लक्ष्य को प्राप्त किया है तथा शहर के परिवहन नेटवर्क को मजबूत करने, भूजल जलभृतों का पुनर्भरण, बाढ़ के खतरे का उन्मूलन, मलिन बस्तियों का पुनर्स्थापन और पुनर्वास, अनौपचारिक बाजारों और मनोरंजक स्थानों का प्रावधान, शहर का सौंदर्यीकरण आदि जैसे प्रमुख शहरी स्तर के लाभ पैदा किए हैं। रिवरफ्रंट परियोजना के कार्यान्वयन से रिवरफ्रंट शहर के बीचोंबीच एक जीवंत और सौंदर्य की दृष्टि से मनभावन वातावरण प्रदान कर रहा है।

विपुल झिंझुवाड़िया,
उप महाप्रबंधक (परियोजना)

सिविल अस्पताल, अहमदाबाद को उन्नत कार्डियोवैस्कुलर लाइफ सपोर्ट (एसीएल) सुविधा के साथ एम्बुलेंस वैन की खरीद के लिए हुडको सीएसआर सहायता

सिविल अस्पताल, असरवा, अहमदाबाद गुजरात सरकार द्वारा संचालित एक चिकित्सा कार्यान्वयन एजेंसी है जिसने हुडको से सीएसआर सहायता प्राप्त की है। सिविल अस्पताल, असरवा एशिया के सबसे बड़े अस्पतालों में से एक है। यह सबसे पुराने, सबसे बड़े और आधुनिक अस्पतालों में से एक है जो लोगों को सभी प्रकार की स्वास्थ्य देखभाल सेवाएँ निःशुल्क प्रदान करता है। सिविल अस्पताल, अहमदाबाद द्वारा प्रतिवर्ष लगभग 10 लाख ओपीडी रोगियों और एक लाख इनडोर रोगियों को अपनी स्वास्थ्य देखभाल सेवाएँ देकर लाभान्वित किया जाता है। सिविल अस्पताल, अहमदाबाद में प्रतिदिन औसतन 3000 ओपीडी रोगी उपचार सुविधाओं का लाभ उठाते हैं।

अस्पताल में 3-4 मंजिलों वाले 8 ब्लॉक हैं जिनमें 30 विभाग हैं, 44 वार्ड, 2000 बिस्तर, 15 ऑपरेशन थिएटर, 45 ऑपरेशन थिएटर टेबल हैं तथा लगभग 4 लाख बड़ी और छोटी सर्जिकल ओपरेशन हर साल किए जाते हैं। इस अस्पताल में प्रति वर्ष औसतन 7500 मातृ प्रसव होते हैं। सिविल अस्पताल में नवनिर्मित ट्रॉमा सेंटर है, जो विशाल होने के बावजूद अच्छी तरह से सभी सुविधाओं से परिपूर्ण है तथा रोगियों और उनके रिश्तेदारों के लिए कई बुनियादी सुविधाएँ इसमें उपलब्ध हैं। आईसीसीयू, एनआईसीयू, एमआईसीयू और क्रिटिकल केयर वार्डों में आपात स्थिति के तहत विभिन्न श्रेणियों ये विशेष केंद्र प्रतिदिन रोगियों की जरूरतों को पूरा करते हैं।

एडवांस्ड कार्डियोवास्कुलर लाइफ सपोर्ट (एसीएलएस), कार्डिएक अरेस्ट, स्ट्रोक, मायोकार्डियल इंफार्क्शन (जिसे हार्ट अटैक के रूप में भी जाना जाता है) और अन्य जानलेवा कार्डियो वैस्कुलर आपात स्थितियों के तत्काल उपचार के लिए क्लिनिकल एल्गोरिदम का एक सेट है। एसीएलएस में एयरवे स्थिरीकरण और गहन उपचार शामिल हैं जिसमें विंड पाइप में श्वास नली को प्लेस करना (इंट्यूबेशन) भी शामिल है। साँस लेने के लिए वेंटिलेटर का उपयोग करके मैकेनिकल वेंटिलेशन प्रदान करना और लगातार ब्लड प्रेशर रीडिंग की निगरानी के लिए धमनी सम्मिलन एसीएलएस के तहत अन्य गतिविधियाँ इसमें शामिल हैं।

Medicity

CERTIFICATE
OF APPRECIATION

Chairman & Managing Director
Housing and Urban Development Corporation
(HUDCO)-New Delhi

We are thankful to
Housing and Urban Development Corporation
For your donation of 2 ambulance vans with advanced cardiovascular life support facility to Civil Hospital Ahmedabad. We salute your contribution towards community in these unprecedented circumstances.

Dr. Jayprakash V. Modi
Medical Superintendent
Civil Hospital, Ahmedabad

CIVIL
HOSPITAL
AHMEDABAD

जीवन के लिए अत्यन्त संघर्ष कर रहे गंभीर रूप से बीमार रोगियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के दौरान देखभाल करने के लिए अस्पताल को उन्नत कार्डियोवास्कुलर लाइफ सपोर्ट (एएलसीएस) की सुविधा से परिपूर्ण एम्बुलेंस की सख्त जरूरत थी। गुजरात सरकार द्वारा संचालित इस सिविल अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक ने 01/07/2019 को दो एम्बुलेंस वैन खरीदने के लिए हडको की सीएसआर सहायता हेतु हुडको से अनुरोध किया था। तत्संबंधित आवश्यक विनिर्देशों और प्रचलित सरकारी दिशानिर्देशों के अनुसार GEM पोर्टल के माध्यम से सिविल अस्पताल, अहमदाबाद के लिए उन्नत कार्डियोवास्कुलर लाइफ सपोर्ट (एसीएलएस) सुविधा से परिपूर्ण दो एम्बुलेंस वैनों की खरीद की योजना बनाई गईथी। सभी आवश्यक उपकरणों के

साथ GEM पोर्टल पर पंजीकृत लागत के अनुसार दो एम्बुलेंस वैन के लिए अनुमानित कुल लागत 70 लाख रुपये थी। इस परियोजना के विस्तृत मूल्यांकन के बाद, हडको बोर्ड ने सिविल अस्पताल, अहमदाबाद हेतु 70 लाख रुपये की सीएसआर सहायता मंजूर की थी। अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय के लिये यह एक यादगार मंजूरी थी क्यों कि हडको के निदेशक मंडल ने हडको की स्वर्ण जंयती के उपलक्ष्य में एम्बुलेंस की खरीद हेतु सीएसआर के अंतर्गत देश के सभी राज्यों में अनुदान देने की स्वीकृति प्रदान की थी । साथ ही अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा तैयार की गई मूल्यांकन रिर्पोट को एक माडल रिर्पोट के रुप में श्रेय देते हुए स्वीकृत किया था ।

बाजार में एयर कंडीशनर सुविधा के साथ डीजल ईंधन के प्रकार वाली एम्बुलेंस वैन के कई मॉडल उपलब्ध हैं जिनमें ट्रैवलर, ब्रांड - फोर्स मोटर्स, मॉडल 3350WB आदि मॉडल कुछ आवश्यक अन्य उपकरणों के साथ जैसे ऑटो लोडर स्ट्रेचर, स्कूप स्ट्रेचर, स्पाइन बोर्ड, व्हील चेयर, हेड इम्मोबिलाइज़र, इमरजेंसी बैग, सक्शन मशीन, ट्रांसपोर्ट वेंटिलेटर, बाइफैसिक डिफाइब्रिलेटर, सिरिंज पंप, न्यूमेटिक स्प्लिंट्स जैसी सुविधाओं के साथ हैं। उसके बाद, एजेंसी ने आवश्यक चिकित्सा उपकरणों के साथ एम्बुलेंस वैन की खरीद की और 70 लाख रुपये की हडको सीएसआर सहायता के माध्यम से GEM पोर्टल से सभी आवश्यक चिकित्सा उपकरणों की खरीद कर रेट्रोफिटिंग का काम पूरा किया।

इस सिविल अस्पताल को एसीएलएस सुविधा के साथ एम्बुलेंस वैन सौंपने के लिए वर्चुअल मोड के माध्यम से हडको के अधिकारियों - श्री एम नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट योजना), श्री डी. गुहान, निदेशक (वित्त), श्री वी.के. जोशी, कार्यकारी निदेशक (सीएसआर), श्री हेम सिंह ओलिवर, क्षेत्रीय प्रमुख (I/C) तथा सिविल अस्पताल के अधिकारियों - डॉ रजनीश पटेल, अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक और डॉ राकेश जोशी, अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक की उपस्थिति में 09.07.2021 को उद्घाटन कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस अवसर पर सिविल अस्पताल द्वारा हडको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक को एक प्रशंसा पत्र भी जारी किया गया । तदुपंरात अन्य क्षेत्रीय कार्यालयों को भी एम्बुलेंस की खरीद हेतु सीएसआर अनुदान दे कर, हडको ने देश भर में कोविड महामारी के दौरान हैल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में अपनी एक पहचान बनाई है ।

दोनों एम्बुलेंस पूरी तरह से लाइफ सपोर्टिंग सिस्टम से युक्त हैं तथा भारत सरकार के खरीद मानदंडों का पूरी तरह से का पालन करते हुए GEM पोर्टल के माध्यम से इन्हें खरीदा गया है। हडको सीएसआर की यह पहल गंभीर देखभाल और तत्काल उपचार के लिए सिविल अस्पताल के बाह्य और इनडोर रोगियों के जीवन की रक्षा में मदद करेगी तथा विशेषत: गंभीर परिस्थितियों के समय रोगियों के उचित और समयानुसार परिवहन द्वारा रोगी देखभाल की गुणवत्ता में सुधार किया जाएगा जिससे रेफरल और बैक रेफरल सिस्टम और अधिक सुदृढ़ होगा।

विपुल झिंझुवाड़िया,
उप महाप्रबंधक (परियोजना)

हडको प्रांगण का अनूठा उद्यान

अहमदाबाद शहर के मध्य में स्थित हडको भवन परिसर एवं प्रांगण अहमदाबाद शहर के सौंदर्य में चार चाँद लगा रहा है। यह परिसर विविधता से भरपूर है। इस प्रांगण में रंग बिरंगे पुष्पों के पौधों, छायादार एवं सुंदर वृक्षों, विशाल लॉन (दूब घास के क्षेत्र) के साथ अनुपम एवं स्वच्छ भवन स्थित है। इस परिसर के समीप अहमदाबाद नगर निगम का बागीचा भी है जहाँ हजारों नागरिक स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने प्रतिदिन आते हैं। हडको भवन परिसर की साफ-सुथरी सड़कें एवं ट्रैक अपने आप में एक अनूठा सौंदर्य प्रस्तुत करते हैं। यहाँ सदाबहार मरु उद्यान एवं तटीय क्षेत्रों के वृक्ष एवं फल-फूलदार पौधे लगाए गए हैं। गुलमोहर के फूलों के साथ कतारबद्ध ताड़ के वृक्ष ऐसे लगते हैं जैसे मानो कि स्वर्ग का सौंदर्य धरती पर उतर आया हो। हडको भवन प्रांगण में भाँति-भाँति के पौधे एवं वृक्ष शोभायमान हैं जिनका विवरण निम्नानुसार है :

1. फलदार वृक्ष : परिसर के उद्यान में अमरूद, जामुन, सीताफल, पपीता, आँवला, नींबू, नारंगी, खजूर, बादाम आदि के पौधे लगाए गए हैं।
2. आयुष वाले पेड़-पौधे : आयुर्वेद की महत्ता विश्व में दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। कोरोना-19 महामारी के पश्चात तो आयुष वाले पेड़-पौधे जीवन रेखा की तरह माने जा रहे हैं। इनमें अडूसी, तुलसी, पीपल, लेमन ग्रास, आँवला, मेंहदी, नीम, मीठा नीम, सींग सरगवा, हरसिंगार, बारामासी, पत्थर चट्टी, बेसिल, पुदीना, नींबू, गिलोय जैसे विविध जड़ी-बूटियों के पौधे लगाए गए हैं। इन आयुष वाले पेड़-पौधों में सर्दी-जुकाम, श्वास रोग, ज्वर, पथरी, अरुचि, अपच, त्वचा रोग, रक्तचाप, मधुमेह, अस्थिरोग, कमजोरी, उदर शूल, दंत रोग, कैंसर आदि रोगों में उपयोगी रामबाण औषधियाँ शामिल हैं। इन औषधियों के उपयोग का लाभ हडको के कार्मिक एवं उनके परिजनों के साथ स्थानीय लोग भी ले रहे हैं।

3. फल-फूलदार पेड़-पौधे : हडको परिसर प्रांगण में लगाए गए फूलदार पेड़-पौधे अपनी हरीतिमा से सबका ध्यान बरबस आकृष्ट करते हैं। इनमें रंगीन गुलमहोर, गैंदा, गुडहल, सफेदा, हरसिंगार, बारामासी, गुलाब, मेहन्दी, कनेर, चम्पा, रातरानी, चमेली, मधुकामिनी, रजनीगंधा आदि के पौधे इस भाँति दिखते हैं मानो फूलों की लम्बी-लम्बी मालाएँ पिरोई हुई हैं। रंग-बिरंगे रंगों के साथ भीनी-भीनी खुशबू से परिसर का समग्र वातावरण आह्लादक बन जाता है। फलवार पेडो मे आंवला, जामुन, अमरुद, सीताफल, आम एवं बादाम मुख्य है ।
4. तटीय वृक्ष : हडको प्रांगण में तटीय वृक्षों में पाम ट्री, ताड, नीलगिरि आदि वृक्ष लगाए गए हैं। इन वृक्षों की कतारें अनायास ही सबका मन मोह लेती हैं। इनसे प्रांगण की खूबसूरती और भी निखर जाती है।
5. मरु उद्यान के पेड़-पौधे : इस प्रांगण में विविध मरुस्थलीय पेड़-पौधे भी इसके सौंदर्य में चार चाँद लगा रहे हैं। बबूल, खेजड़ी, कोठा, बेर, नीम एवं केक्टस प्रजाति के सैकड़ों पेड़-पौधे इस प्रांगण के बगीचे की सुंदरता में अपनी उपस्थिति दर्शा रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे पृथ्वी के सभी रूप इस प्रांगण में विद्यमान हैं।
6. सदाबहार वृक्ष : कुछ पेड़-पौधे सदाबहार कोटि के हैं जो सदाबहार जंगल की तरह हरियाली बिखेर रहे हैं। जंगली वृक्ष एवं बारहमासी सदाबहार पौधे, लाजवंती, चम्पा, आसोपालव आदि के पेड़-पौधे परिसर के चारो तरफ परिसर के रक्षक के रूप में खड़े हैं।
7. विशाल लॉन दूब घास : प्रांगण के पेड़-पौधों के मध्य में विशाल दूब घास का लॉन अपनी हरी-भरी छटाएँ बिखेर रहा है जिस पर दोपहर में लंच के समय हडको एंव अन्य किराएदार कार्यालयों के कार्मिक बैठकर धूप सेकते हैं या टहलकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं।

इस मनमोहक, प्राकृतिक, अनुपम, रंगीन एवं अद्भुत प्रांगण का आनंद हडको के सभी कार्मिक एवं विजिटर ले रहे हैं। यह प्रांगण प्राणवायु से भरपूर है। यहाँ की प्राणवायु हमें नित्यप्रतिदिन तरोताजा रखती है।

इस परिसर एवं प्रांगण का रखरखाव अत्यंत सुचारु रूप से स्वैच्छिक सेवाओं के माध्यम से किया जा रहा है। इस हडको भवन का निर्माण और इसकी डिजाइन अपने आप में अद्भुत है। परिसर के दोनों तरफ चौड़ी-चौड़ी सड़कें विद्यमान हैं जिनसे होकर गुजरने वाले राहगीरों पर भी इस परिसर की अमिट छाप पड़ती है। ऐसे सुंदर दृश्य से परिपूर्ण हडको का यह भवन सभी के दिलों पर अपनी अमिट छाप छोड़ता है। अहमदाबाद शहर में हडको भवन एवं इसके परिसर का पता किसी को खोजने की जरूरत नहीं पड़ती है। इसकी लोकप्रियता शहर के कोने-कोने में फैली हुई है।

हम हडको परिवार के सदस्य बहुत ही सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे मनोरम स्थल पर हमें कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

श्री नरपत सिंह पुरोहित
प्रबंधक (वित्त)

गुजरात राज्य में नवरात्रि उत्सव

नवरात्रि हिंदुओं का एक प्रमुख पर्व है। नवरात्रि शब्द एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है 'नौ रातें'। इन नौ रातों और दस दिनों के दौरान, शक्ति / देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। दसवाँ दिन दशहरा के नाम से प्रसिद्ध है। यह त्यौहार असत्य पर सत्य की जीत को दर्शाता है। नवरात्रि वर्ष में चार बार आता है। पौष, चैत्र, आषाढ, अश्विन मास में प्रतिपदा से नवमी तक मनाया जाता है। नवरात्रि नौ दिनों के लिए निरंतर चलता है जिसमे देवी माँ के अलग अलग स्वरूपों की लोग भक्ति और निष्ठा के साथ पूजा करते है। नवरात्रि के नौ रातों में तीन देवियों - महालक्ष्मी, महासरस्वती या सरस्वती और महाकाली के नौ स्वरुपों की पूजा होती है ।

नवरात्रि पर्व के पीछे की कहानी

नवरात्रि के पीछे कथा प्रचलित है कि महिषासुर एक राक्षस था जिसे ब्रह्मा जी का वरदान प्राप्त था कि उसे कोई मार नहीं सकता, इसलिये उसने उत्पात मचाया हुआ था।। लोग उसके अत्याचारों से परेशान थे तब ब्रह्मा, विष्णु और शिव जी ने अपनी शक्ति को मिलान कर देवी दुर्गा की सृष्टि की थी। देवी दुर्गा के दस हाथ थे और सारी शक्तियां भी उन्हें दी गयी थी। देवी दुर्गा ने नौ दिनों तक इस राक्षस का मुकाबला किया और अंत में दसवे दिन में जाकर उसका वध किया। देवी दुर्गा की इस शक्ति को नवरात्रि के इस त्यौहार में धूम धाम से मनाया जाता है। नवरात्रि के नौ दिन उस समय के सबसे घातक राक्षसों से निपटनें में देवी के शानदार कौशल को दर्शाते हैं। इसलिए नवरात्रि भक्तों के लिए उपवास, ध्यान और दिव्य माता से प्रार्थना करने का एक महत्वपूर्ण समय है, ताकि वे अपने जीवन के राक्षसों (समस्याओं) का मुकाबला करने के लिए आंतरिक शक्ति और कौशल प्राप्त कर सकें । नवरात्रि के प्रत्येक दिन का महत्व देवी मां के एक रूप से जुडा हुआ है।

नवरात्रि पर्व के नौ दिवस की पूजा

<u>पहला दिन</u> : नवरात्रि के पहले दिन शैलपुत्री माँ की पूजा की जाती है। इनकी आराधना करने से लोगो को एक किस्म की ऊर्जा मिलती है। इस ऊर्जा का उपयोग भक्त अपने मन की अशांति को दूर करने के लिए करते है।

<u>दूसरा दिन</u> : नवरात्रि के दूसरे दिन देवी दुर्गा के ब्रह्मचारिणी स्वरुप की आराधना की जाती है। इसका उद्देश्य है कि हम इस दुनिया में अपना एक मुकाम हासिल कर सके और अपनी पहचान बना सके।

<u>तीसरा दिन</u>: नवरात्रि के तीसरे दिन भक्त देवी दुर्गा के चंद्रघंटा स्वरुप की पूजा करते है। चंद्रघंटा इसलिए नाम दिया गया है, क्यूंकि माँ का स्वरुप चाँद के जैसे चमकता है। इनकी पूजा करने से मन में उतपन्न सारे नकारात्मक और गलत विचार दूर हो जाते है। ईर्ष्या, घृणा जैसे विचारो से हमे मुकाबला करने की शक्ति मिलती है।

<u>चौथा दिन</u> : नवरात्रि के चौथे दिन लोग दुर्गा माँ के कूष्माण्डा स्वरुप की पूजा करते है। इनकी पूजा करने से हम उन्नति की राह पर चलते है और इनका आशीर्वाद हमारे सोचने समझने की शक्ति को बेहतर तरीके से विकसित करता है।

<u>पांचवा दिन</u> : नवरात्रि के पांचवे दिन स्कंदमाता की पूजा की जाती है। उनको कार्तिकेय माता भी कहा गया है। इनके पूजा करने से भक्तो के अंदरूनी व्यवहारिक ज्ञान को विकसित करने के लिए उनका आशीर्वाद मिलता है।

छठा दिन : नवरात्रि के छठवें दिन देवी दुर्गा के कात्यायनी स्वरुप की पूजा की जाती है। माँ कात्यायनी की आराधना करने से मनुष्य के अंदर के नकारात्मक विचार दूर हो जाते है। माँ के दिए हुए आर्शीवाद से हम सही मार्ग पर चल सकते है।

सातवां दिन : नवरात्रि के सातवे दिन पर देवी दुर्गा के कालरात्रि के स्वरुप की पूजा करते है। देवी कालरात्रि की पूजा करने से लोगो को अपने जीवन में यश, सम्मान और कीर्ति प्राप्त होता है।

आठवां दिन : नवरात्रि के आठवे दिन देवी दुर्गा के महागौरी के स्वरुप की आराधना की जाती है। माँ महागौरी को सफ़ेद रंग की देवी के रूप में पूजा जाता है। इनकी आराधना करने से मनुष्य की सारी मन की इच्छा पूरी हो जाती है।

नौवां दिन : नवरात्रि के नौवे दिन देवी दुर्गा के सिद्धिदात्री स्वरुप की आराधना लोगो द्वारा की जाती है। इनकी पूजा करने से हमें ताकत मिलती है कि हम मुश्किल और अधूरे कार्यो को सफलतापूर्वक पूरा करे।

गुजरात में नवरात्रि महोत्सव और गरबा

वैसे तो नवरात्रि उत्सव उत्तर भारत के ज्यादातर जगहों पर मनाया जाता है लेकिन गुजरात में इस उत्सव को डांडिया और गरबा के रूप में मनाया जाता है । मां की आराधना में किया जाने वाला गुजरात का गरबा रास आज पूरे देश में लोकप्रिय हो चुका है। गुजरात के छोटे से छोटे गांव से लेकर शहरों तक में ये नृत्य पूरी श्रद्धा और उत्साह से किया जाता है ।

गुजरात के लोग गरबा द्वारा मां को प्रसन्न करते हैं क्योंकि ऐसा माना जाता है कि मां दुर्गा को गरबा बहुत प्रिय है। मां दुर्गा की आरती के बाद शुरू होता है नवरात्रि उत्सव। नवरात्रि के पहले दिन मिट्टी का घड़ा स्थापित किया जाता है जिसमें एक चांदी का सिक्का और दीपक रखा जाता है। गरबा और डांडिया दो अलग-अलग चीज़ हैं। जहां गरबा मां दुर्गा तो वहीं डांडिया कृष्ण और गोपियों को समर्पित है।

गरबा नृत्य

डांडिया नृत्य

निष्कर्ष

नवरात्रि का पर्व हमे कोशिश करना सिखाता है। हमे जीवन में परिश्रम करना सिखाता है, ताकि हम अपनी अंदरूनी शक्ति को पहचान कर, जीवन में अपनी राह चुन कर उसे हासिल कर सके।

विपुल झिंझुवाड़िया,
उप महाप्रबंधक (परियोजना)

सी.एस.आर. के तहत गुजरात राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में हडको का योगदान

अहमदाबाद के खोखरा एवं सरसपुर में नाईट शेल्टर का निर्माण

राजकोट में 9 कौशल उन्नयन केंद्रों का निर्माण

कलाली एरिया, वडोदरा में 2 नाइट शेल्टर का निर्माण

आंगनबाडी केंद्रों और सरकारी स्कूल के बच्चों को मिड डे मील कार्यक्रम हेतु दमन मे केंद्रीकृत रसोई का निर्माण (अक्षय पात्र द्वारा संचालित)

सूरत में विभिन्न स्थलो पर पे एंड यूज शौचालयों का निर्माण

राजकोट के स्कूल नंबर 1, श्री किशोरजी प्राथमिक विद्यालय में टायलेट ब्लाक्स का निर्माण,
(जहां महात्मा गांधी ने अध्ययन किया था)

राजकोट के स्कूल नंबर 19 श्री जयबेन जटाशंकर पातक प्राथमिक विद्यालय एंव
स्कूल नंबर 46 श्री लोकमान्य तिलक प्राथमिक विद्यालय में टायलेट ब्लाक्स का निर्माण

गुजरात विद्यापीठ

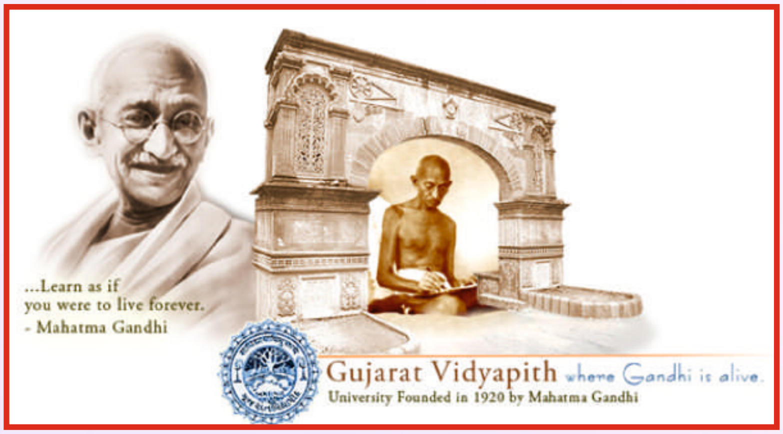

जवाहरलाल नेहरू गुजरात विद्यापीठ की अपनी यात्रा के दौरान, फरवरी 1949

गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद , गुजरात में एक डीम्ड विश्वविद्यालय है । गुजरात विद्यापीठ की स्थापना महात्मा गांधी जी ने 18 अक्टूबर सन् 1920 में अहमदाबाद में की थी । इसकी स्थापना का उद्देश्य भारतीय युवकों को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराना था। गांधी जी इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि मैकाले द्वारा रची गयी ब्रिटेन की औपनिवेशिक शिक्षा नीति का उद्देश्य दमनकारी ब्रिटिश साम्राज्य के लिये क्लर्क तैयार करना है। उस शिक्षा नीति के विरुद्ध गांधी जी ने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं हिंद स्वराज के लिये युवकों को तैयार करने के उद्देश्य से गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की थी।

गांधी जी ने इसका चैरिटेबल ट्रस्ट के रूप में पंजीकरण कराते समय फॉर्म में 'गुजरात विद्यापीठ' लिखा था इसलिए इसके पंजीकरण में 'गुजरात विद्यापीठ' लिखा होने से इसके गेट पर लगे बोर्ड 'गुजरात विद्यापीठ' में भाषाकीय त्रुटि निकालना सही नहीं है। दूसरे, उस समय के गुजराती के प्रतिष्ठित विद्वान 'गुर्जर+त्रा' से 'गुजरात ' व्युत्पत्ति करते थे जिसका समर्थन गांधी जी भी करते थे। प्रस्तुत आलेख में सर्वत्र 'गुजरात विद्यापीठ' शब्द का उपयोग किया गया है।

इस विद्यापीठ की स्थापना का अनुकरण करते हुए वाराणसी, मुम्बई, कलकत्ता, वर्धा, मद्रास एवं अन्य कई नगरों के राष्ट्रवादी नेताओं ने विद्यापीठों की स्थापना की। गांधी जी ने ब्रितानी संस्थानों, वस्तुओं एवं प्रभावों के बहिष्कार का जो आह्वान किया था, उस पर हजारों छात्रों और अध्यापकों ने ब्रितानी कालेज छोड़कर विद्यापीठों में प्रवेश लिया। जीवतराम कृपलानी और नानाभाई भट्ट जैसे अनेक लोग पढ़ाने के लिए आगे आये। गांधी जी इसके आजीवन कुलाधिपति रहे।

भारत सरकार ने 1963 ई. में गुजरात विद्यापीठ को केंद्र द्वारा शत प्रतिशत रूप से वित्तपोषित डीम्ड टू बी युनिवर्सिटी (मानित विश्वविद्यालय) का दर्जा दिया जो कि वर्तमान समय में भी बरकरार है। वर्तमान समय मेंगुजरात विद्यापीठ विश्वविद्यालय जगत में **NAAC** के मूल्यांकन पर पूर्णतः खरा उतरकर ए ग्रेड प्राप्त डीम्ड टू बी युनिवर्सिटी (मानित विश्वविद्यालय) है। इसलिए इस पर भारत सरकार की राजभाषा नीति भी अन्य केंद्रीय कार्यालयों की भाँति लागू होती है तथा यह नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के केंद्र सरकार के सदस्य संस्थानों में शुरूआत से शामिल है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद का गठन भीगुजरात विद्यापीठ में ही हुआ तथा नराकास, अहमदाबाद की में पहली बैठक 1978 ई. गुजरात विद्यापीठ में ही आयोजित की गई थी।

गुजरात विद्यापीठ की शिक्षा व्यवस्था किसी भी भारतीय विश्वविद्यालय से निम्न स्तर की नहीं है। **NAAC** का "ए ग्रेड" गुजरात विद्यापीठ को मिला हुआ है जो किसी विश्वविद्यालयी शिक्षा के उच्च मानक को सिद्ध करता है। विद्यापीठ का उच्च शिक्षण केंद्र सरकार द्वारा शिक्षा मंत्रालय और यू.जी.सी. के माध्यम से शत प्रतिशत वित्तपोषित है। उच्चशिक्षण में कार्यरत सभी शैक्षिक और गैर शैक्षिक स्टाफ को यू.जी.सी. के वेतनमान एवं अन्य सभी लाभ प्राप्त होते हैं। पुरानी और नई सरकारी पेंशन व्यवस्था भी पहले से ही लागू है।

गुजरात विद्यापीठ ने समयानुसार आवश्यकता तथा छात्रों को सरकारी, गैर-सरकारी क्षेत्रों में रोजगार आदि में शामिल होने के लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अनुसार अपनी डिग्रियों के नामों में परिवर्तन भी किया है जिससे वर्तमान समय में बी.ए., बीएस.सी, एम.ए., एमएस.सी, बी.लिब., एम. लिब., एम.सी.ए., एम.एस.डब्ल्यू., पी.जी. डिप्लोमा, एम.फिल., पीएच.डी. आदि डिग्रियाँ प्रदान की जाती हैं।

गुजरात विद्यापीठ में वर्तमान समय में निम्नानुसार संकाय (**Faculty**) कार्यरत हैं :
1. भाषा (Language), 2.सामाजिक एवं सहयोगी विज्ञान (Social and allied Science), 3.शिक्षा (Education), 4. गांधी विचार (Gandhian Studies), 5.व्यावसायिक अध्ययन (Professional Studies) 6.शारीरिक शिक्षा और खेलकूद (Physical Education and Sports), 7.विज्ञान एवं प्रायोगिक विज्ञान (Science and Applied Science), और 8.प्रबंधन और प्रौद्योगिकी (Management and Technology)
गुजरात विद्यापीठ की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नानुसार हैं :

- ग्रामोद्योग और ग्रामोन्नति के लिए समाज सेवक : विद्यापीठ के शिक्षण की विशेषता ग्रामोद्योग और ग्रामोन्नति के लिए समाज सेवक तैयार करना है और राष्ट्र पोषक शिक्षा द्वारा समाज सेवा कार्य का विकास करना है।
- सामुदायिक जीवन : विद्यापीठ के जीवन की एक विशेषता है - सामुदायिक जीवन का अनुभव प्रदान करना जिसमें सामूहिक प्रार्थना से लेकर शौचालय तक की सफाई स्वयं करना शामिल है।
- शिक्षा का माध्यम-मातृभाषा : विद्यापीठ में प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर स्नातकोत्तर तक हर प्रकार की शिक्षा का माध्यम मातृभाषा गुजराती है। वर्तमान समय में हिंदी, अंग्रेजी और गुजराती - इन तीनों भाषाओं में शिक्षा की व्यवस्था है।
- अन्य विशेषताएँ : अन्य विशेषताओं में उत्पादन कार्य में सम्भाग, वर्ष में लगभग 240 दिन कार्य, दैनिक प्रार्थना में भाग लेना, आदतन खादी पहनना, सूत कातना, मादक द्रव्यों का सेवन न करना, सामाजिक समस्याओं पर शोध करना आदि शामिल है।

महात्मा गांधी कहा करते थे कि भारत का उद्धार तभी होगा जब गाँवों का उद्धार होगा। गुजरात विद्यापीठ देश की इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील है। गाँवों का विकास करने के लिए किस प्रकार कार्य करने की आवश्यकता है, इसका क्रियात्मक अनुभव देने वाली यह अपने ढंग की अद्वितीय संस्था है। गुजरात विद्यापीठ में महात्मा गांधी एवं श्री मोरारजी देसाई के जीवन से जुड़ी तमाम वस्तुओं को एक विशेष संग्रहालय में सँजोकर रखा गया है।

डॉ. राम गोपाल सिंह
डीन (भाषा एंव साहित्य विभाग),
गुजरात विद्यापीठ

लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में लोकतंत्र स्थापित करने में मदद करने वाले अग्रदूतों में से एक थॉमस जेफरसन ने कहा कि अगर उन्हें बिना अखबार वाली सरकार या सरकार के बिना अखबारों में से किसी एक को चुनना हो तो वे अखबार को चुनेंगे। यह कथन लोकतंत्र की सफल निरंतरता में मीडिया की भूमिका को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है। भारत में भी, स्वतंत्रता-पूर्व के समय से, मीडिया ने पूरे देश में भीड़ जुटाने और राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि, बदलते समय और मीडिया उद्योग को ठीक से संचालित करने के लिए किसी कानून की अनुपस्थिति के साथ, मीडिया की भूमिका और कामकाज एक बहस का मुद्दा बन गया है।

लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में कार्य करते हुए, मीडिया को लोकतंत्र की निरंतरता में मदद करने के लिए कुछ बड़ी जिम्मेदारी मिली है। जहाँ लोकतंत्र के अन्य तीन अंगों के रूप में - कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका - एक दूसरे पर नियंत्रण और संतुलन रखते हैं, वहां पर मीडिया उनकी शक्तियों को सीमित करने के साधन के रूप में कार्य करता है। मीडिया अक्सर सरकार, संसद, स्थानीय निकायों में पदस्थ अधिकारियों तथा सत्ता में बैठे लोगों को चुनौती देता है और उन्हें उन कार्यों के लिए जिम्मेदार बनाता है जो राष्ट्र निर्माण के लिए किए जाने चाहिए। मीडिया का मूल कार्य जिम्मेदारी से सूचना देना और इसे इस तरह से संप्रेषित करना है कि विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच संबंध ठीक से बना रहे।

वास्तविक लोकतंत्र में मीडिया को सेंसरशिप से मुक्त होना चाहिए। सेंसरशिप से सरकार को उन खबरों पर अंकुश लगाने में मदद मिलती है जो उनकी छवि खराब कर रही हैं। सेंसरशिप ही नहीं, मीडिया संगठनों को भी सेल्फ सेंसरशिप से बचना चाहिए। साथ ही उनके प्रभावी कामकाज के लिए मीडिया को सरकार के नियंत्रण से मुक्त होना चाहिए। जब सरकार के नियंत्रण में रहकर मीडिया संगठन केवल उन तथ्यों को संप्रेषित करने के लिए मजबूर हो जाते हैं जिनके लिए सरकार उन्हें अनुमति देती है तो इस बारे में अटकलें लगाना स्वाभाविक ही है कि क्या वास्तव में सच का पक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है या नहीं। साथ ही, भौतिक और नैतिक दबाव से मुक्त होने से मीडिया संगठनों को प्रसारण सच्चाई को भी प्रस्तुत करने में मदद मिलती है। मीडिया की समाज में सर्वत्र व्याप्ति है अतः ऐसा कोई भी दबाव जिससे समाचार सामग्री की छानबीन करना लाजिमी हो जाता है, वह अक्सर पत्रकारिता के नियम के खिलाफ जाता है।

हाल के वर्षों में यह देखा गया है कि भ्रष्टाचार और अन्य कुरीतियों ने मीडिया में अपनी स्थिति बनानी शुरू कर दी है। पत्रकारिता में पाठकों/दर्शकों को खुश करने के लिए समाचारों के अत्यधिक सनसनीखेज बनाकर प्रस्तुत करने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। टेलीविज़न रेटिंग पॉइंट की गलाकाट अंधी दौड़ में विभिन्न मीडिया संगठन भी उन समाचारों को प्रसारित करते हैं जो पत्रकारिता की आदर्श प्रथाओं के लिए नैतिक नहीं कहे जा सकते। इस बिगड़ती प्रथा के अलावा, नए पत्रकार अक्सर किसी न किसी संगठन के खिलाफ अपने काम के लिए वसूली करते पाए जाते हैं और इस प्रकार का खेल परदे के पीछे खेला जाता है। हाल ही में, भारत के एक प्रमुख मीडिया हाउस का नाम इसी तरह के एक मामले में सामने आया था, जहाँ संगठन के संपादक को उनके खिलाफ समाचार प्रकाशित नहीं करने के लिए एक कॉर्पोरेट घराने से पैसे की माँग करते पाया गया था। सत्ता का ऐसा दुरुपयोग करना यदि मीडिया अपना अधिकार मानता है तो इसका समाज पर गंभीर और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ना लाजिमी है।

इंटरनेट के आगमन के साथ और डिजिटल क्रांति के बाद, सूचना प्रवाह में जबरदस्त वृद्धि हुई है। इंटरनेट के बढ़ते उपयोग ने मीडिया की भूमिका का विस्तार किया है। सोशल मीडिया एक नई अवधारणा है जो इंटरनेट के साथ आई है और अब यह खूब प्रचलित हो गई है। सूचना और समाचार के वितरण के लिए सोशल मीडिया का उपयोग एक सामान्य बात हो गई है, हालाँकि सोशल मीडिया और इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म जहाँ हर कोई स्वतंत्र रूप से अपनी राय व्यक्त कर सकता है, अक्सर भ्रामक जानकारी उत्पन्न करता है। भारत में, ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जिसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर हिंसा की घटनाएँ हुई हैं। असम में एक फेक वीडियो प्रसारित किया गया था, जिसके कारण उत्तर-पूर्व समुदाय के कुछ लोग दक्षिण भारत से कुछ अन्य हिस्सों में पलायन कर गए थे। इसी तरह मुजफ्फरनगर हिंसा के मामले में, नफरत फैलाने के लिए सोशल मीडिया पर सामग्री प्रसारित की गई थी। भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को नियंत्रित करने के लिए किसी भी नियामक कानून के अभाव में इस तरह की प्रथा मीडिया की मूल प्रकृति का हनन करती है। साथ ही, सरकार अभी भी इस मुद्दे पर बहस कर रही है कि इस सोशल मीडिया के खतरे को रोकने के लिए कौन-सा तरीका अपनाया जाए।

पत्रकारों के बिगड़ते नैतिक आचरण से निपटना भी एक प्रमुख मुद्दा है। हालाँकि, पत्रकारिता की शुरूआत कुछ मानकों के साथ हुई थी जिनका पालन पत्रकार और मीडिया संगठनों को भी करना था, लेकिन अब ऐसा लगता है कि किसी को इसकी कोई परवाह नहीं है। सिर्फ सार्वजनिक तुष्टीकरण के लिए सनसनीखेज खबरें, अश्लील सामग्री वाले वीडियो खुलेआम प्रदर्शित किए जाते हैं। साथ ही, मशहूर हस्तियों, राजनेताओं और अन्य राजनीतिक हस्तियों के निजी जीवन को अक्सर सार्वजनिक किया जाता है। सबसे व्यापक प्रथाओं में से एक प्रथा मीडिया ट्राईल है जो लोकतंत्र की मूल प्रकृति के खिलाफ है। इस मीडिया ट्राईल के तहत संबंधित व्यक्ति को दोषी ठहराए जाने से पहले ही मीडिया उसे असली अपराधियों के रूप में चित्रित करना शुरू कर देता है। नैतिक आचरण की कमी भारतीय मीडिया में हमेशा बढ़ती चिंता का विषय रही है।

इस तरह की बातें करने के साथ ही यह बात भी हमें स्वीकार करनी चाहिए कि इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं होता और यह बात मीडिया पर भी लागू होती है। ऐसे समय में मीडिया को ऐसे मुद्दों के निराकरण पर काम करना चाहिए जो कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में लोगों की आकांक्षाओं को पूरा कर सके। वास्तव में, एक सक्रिय और जबावदार मीडिया के बिना एक सच्चे लोकतंत्र की कल्पना नहीं की जा सकती।

श्री अंकित शर्मा
अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय

गांधी जी का साबरमती आश्रम

साबरमती आश्रम गुजरात राज्य में अहमदाबाद में साबरमती नदी के किनारे स्थित है। जब तक साबरमती आश्रम का दर्शन न किया जाए तब तक गुजरात या अहमदाबाद नगर की यात्रा अपूर्ण ही रहती है। अब तक विश्व के अनेक देशों के प्रधानों, राजनीतिज्ञों एवं विशिष्ट व्यक्तियों ने इस आश्रम के दर्शन किए हैं। वर्तमान समय में गांधी आश्रम एक सुप्रसिद्ध टूरिस्ट पोइंट के रूप में शामिल है जहाँ देश-विदेश के पर्यटकों का ताँता लगा रहता है।

महात्मा गांधी जब अपने 25 साथियों के साथ दक्षिणी अफ्रीका से भारत लौटे तो 25 मई, 1915 को अहमदाबाद में कोचरब स्थान पर उन्होंने सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की। दो वर्ष के पश्चात् 17 जून, 1917 में आश्रम साबरमती नदी के किनारे पर बनाया गया जो बाद में साबरमती आश्रम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आश्रम के वर्तमान स्थान के संबंध में इतिहासकारों का मत है कि पौराणिक दधीचि ऋषि का आश्रम भी यहीं पर था। आश्रम वृक्षों की शीतल छाया में स्थित है। यहाँ की सादगी एवं शांति देखकर सभी आश्चर्यचकित रह जाते हैं। आश्रम की एक ओर सेंट्रल जेल और दूसरी ओर दूधेश्वर श्मशान है। आश्रम में प्रारंभ से निवास के लिये कैनवास के खेमे और टीन से छाया हुआ रसोईघर था। 1917 के अंत में यहाँ के निवासियों की कुल संख्या 40 थी। आश्रम का जीवन गांधी जी के सत्य, अहिंसा आत्मससंयम, विराग एवं समानता के सिद्धांतों पर आधारित महान प्रयोग था और यह जीवन उस सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्रांति का, जो महात्मा जी के मस्तिष्क में थी, का प्रतीक था।

साबरमती आश्रम सामुदायिक जीवन को, जो भारतीय जनता के जीवन से सादृय रखता है, विकसित करने की प्रयोगशाला कहा जा सकता था। इस आश्रम में विभिन्न धर्मावलबियों में एकता स्थापित करने, चर्खा, खादी एवं ग्रामोद्योग द्वारा जनता की आर्थिक स्थिति सुधारने और अहिंसात्मक सहयोग या सत्याग्रह के द्वारा जनता में स्वतंत्रता की भावना जाग्रत करने के प्रयोग किए गए। आश्रम भारतीय जनता एवं भारतीय नेताओं के लिए प्रेरणास्रोत तथा भारत के स्वतंत्रता संघर्ष से संबंधित कार्यों का केंद्रबिंदु रहा है। कताई एवं बुनाई के साथ-साथ चर्खे का निर्माण कार्य भी धीरे-धीरे इस आश्रम में होने लगा।

आश्रम में रहते हुए ही गांधी जी ने अहमदाबाद की मिलों में हुई हड़ताल का सफल संचालन किया। तत्पचात् गांधी जी ने आश्रम में रहते हुए खेड़ा सत्याग्रह का सूत्रपात किया। रालेट समिति की सिफारिशों का विरोध करने के लिए गांधी जी ने यहाँ तत्कालीन राष्ट्रीय नेताओं का एक सम्मेलन आयोजित किया और सभी उपस्थित लोगों ने सत्याग्रह के प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किए।

गांधी जी ने आश्रम में 1915 से 1933 तक निवास किया था। जब वे साबरमती में होते थे, तो एक छोटी सी कुटिया में रहते थे जिसे आज भी "हृदय-कुंज" कहा जाता है। यह ऐतिहासिक दृष्टि से अमूल्य निधि है जहाँ उनका डेस्क, खादी का कुर्ता, उनके पत्र आदि मौजूद हैं। ‘हृदय-कुंज’ के दाईं ओर ‘नन्दिनी’ है। यह इस समय ‘अतिथि-कक्ष’ है जहाँ देश और विदेश से आए हर अतिथि ठहराए जाते थे। वहीं "विनोबा कुटीर" है जहाँ आचार्य विनोबा भावे ठहरे थे।

महात्मा गांधी के प्रयोगों की शुरुआत यहीं से हुई थी। साबरमती नदी के किनारे बसा यह आश्रम आज़ादी की लड़ाई का महत्त्वपूर्ण केंद्र रहा है। महात्मा गांधी जी ने 12 मार्च, 1930 को साबरमती आश्रम से ही दांडी मार्च आरम्भ किया था। 241 मील की दूरी करके 5 अप्रैल, 1930 को दांडी पहुंचे और अगले दिन नमक-क़ानून तोड़ कर स्वतंत्रता संग्राम में एक नया अध्याय जोड़ दिया। जनता में एक नया जोश उमड़ गया और भी कई आंदोलनों की रणनीति यहीं बनी। आज आश्रम प्रेरणा और मार्गदर्शन स्रोत के रूप में सेवा करता है और गांधीजी के जीवन के मिशन के स्मारक और संघर्षकारियों के लिए साक्ष्य बन गया।

गांधी जी की मृत्यु के पश्चात उनकी स्मृति को निरंतर सुरक्षित रखने के उद्धेश्य से एक राष्ट्रीय स्मारक की स्थापना की गई। साबरमती आश्रम गांधी जी के नेतृत्व के आरंभ काल से ही संबंधित है, अतः गांधी-स्मारक-निधि नामक संगठन ने यह निर्णय किया कि आश्रम के उन भवनों को, जो गांधी जी से संबंधित थे, सुरक्षित रखा जाए। इसलिए 1951 ई. में साबरमती आश्रम सुरक्षा एवं स्मृति न्यास अस्तित्व में आया। उसी समय से यह न्यास महात्मा गांधी के निवास, हृदयकुंज, उपासना भूमि नामक प्रार्थनास्थल और मगन निवास की सुरक्षा के लिए कार्य कर रहा है।

हृदयकुंज में गांधी जी एवं कस्तूरबा ने लगभग 12 वर्षों तक निवास किया था। 10 मई, 1963 ई. को श्री जवाहरलाल नेहरू ने हृदयकुंज के समीप गांधी स्मृति संग्रहालय का उद्घाटन किया। इस संग्रहालय में गांधी जी के पत्र, फोटोग्राफ और अन्य दस्तावेज रखे गए हैं। यंग इंडिया, नवजीवन तथा हरिजन में प्रकाशित गांधी जी के 400 लेखों की मूल प्रतियाँ, बचपन से लेकर मृत्यु तक के फोटोग्राफों का बृहत् संग्रह और भारत तथा विदेशों में भ्रमण के समय दिए गए भाषणों के 100 संग्रह यहाँ प्रदर्शित किए गए हैं। संग्रहालय में पुस्तकालय भी हैं, जिसमें साबरमती आश्रम की 4,000 तथा महादेव देसाई की 3,000 पुस्तकों का संग्रह है। इस संग्रहालय में महात्मा गांधी द्वारा और उनको लिखे गए 30,000 पत्रों की अनुक्रमणिका है। इन पत्रों में कुछ तो मूल रूप में ही हैं और कुछ के माइक्रोफिल्म सुरक्षित रखे गए हैं।

राजेश चंदीरमानी
उप प्रबंधक (वित्त)

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा दिनांक 16.02.2018 को अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय का निरीक्षण

हडको, अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 30.06.2021 को आयोजित नराकास, अहमदाबाद स्तरीय निबंध प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागीगण का पुरुस्कार वितरण समारोह

गुजरात राज्य में हडको प्रचालन

विवरण	संचयी (मार्च 2022 तक)
परियोजनाओं की कुल संख्या	**1255**
परियोजना लागत (राशि करोड़ में)	**78551.83**
स्वीकृत ऋण (राशि करोड़ में)	**7559.64**
जारी ऋण (राशि करोड़ में)	**6861.93**
कुल आवासीय यूनिट	**594304**
ई डब्लू एस (शहरी)	**160873**
ई डब्लू एस (ग्रामीण)	**292778**
एल आई जी (शहरी)	**72672**
एल आई जी (ग्रामीण)	**2680**
एम आई जी / एच आई जी	**64442**
हडको निवास	**859**
अर्बन इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं की संख्या	**79**
क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी योजना (पीएमएवाई-वर्टिकल)	
कूल आवासीय आवास यूनिट	
ई डब्लू एस / एल आई जी (शहरी)	**29083**
एम आई जी	**3532**
सब्सिडी जारी (करोड़ में)	**801.33**
कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व)सीएसआर) के तहत प्रदान की गई सहायता	
स्वीकृत प्रस्तावों की संख्या	**8**
स्वीकृत सीएसआर अनुदान राशि (करोड़ में)	**5.17**
अवमुक्त सीएसआर अनुदान राशि (करोड़ में)	**5.03**

बधाई हो

मानसी गर्ग, पुत्री श्रीमती निशि गर्ग, क्षेत्रीय प्रमुख
मास्टर इन अर्बन डिनाईनिंग के लिये आल्टो यूनिर्वसिटी, फिनलैंड
तथा चार्ल्स कोरिया फाउंडेशन में फैलोशिप के लिये चयन

प्रांजुली गर्ग, पुत्री श्रीमती निशि गर्ग, क्षेत्रीय प्रमुख
बी-टैक इन फुड टैक्नोलोजी की डिग्री में 8.28 ग्रेड पाइंट एंव
मौंडलेज इंटरनेश्नल (कैडबरी) में प्लेसमेंट

विदित झींझुवाड़िया,
पुत्र श्री विपुल झींझुवाड़िया, उप महाप्रबंधक (परि.)
ऐम-टैक इन ईन्डस्ट्रीयल इंजीनियरिंग की डिग्री
यूनिर्वसिटी ऑफ विन्डसर, ओंटारियों, कैनेडा से प्राप्त की

पूजा दासानी, पुत्री श्रीमती स्वाति दासानी, प्रबंधक (सचिवीय)
एम.एस.सी. इन बिजनेस एनॉलिटिक्स प्रोग्राम के लिये
SMU, COX स्कूल ऑफ बिजनेस, अमेरिका में चयन

ऐश्वर्या मेनोन, पुत्री श्रीमती अनिता मेनोन,
उप. प्रबंधक (प्रशा), एम.ए. ईन प्रोफेशनल राईटींग
एन्ड पब्लिशिंग की डिग्री करटिन यूनिवर्सिटी, ओस्ट्रेलिया से प्राप्त की

कुणाल मदनलाल परिहार,
पुत्र श्री मदनलाल परिहार, ए.एफ.
कास्ट अकाऊटिंग एण्ड मैनेजमेंट का फर्स्ट ग्रुप उत्तीर्ण किया

हडको

हाउसिंग एन्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय,

हडको भवन, 2 मंजील, ईश्वर भुवन रोड, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380009

दूरभाष : 079-26580684/3488 फैक्स : 079-26580804

ई-मेल: aro@hudco.org